20 APR 2017

# जैन तीर्थवंदना

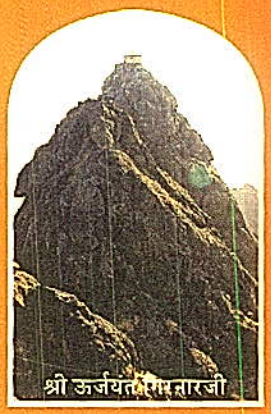


भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

वीर निर्वाण संवत् 2543

VOLUME : 7 ISSUE : 10 MUMBAI, APRIL 2017 PAGES : 40 PRICE : ₹25

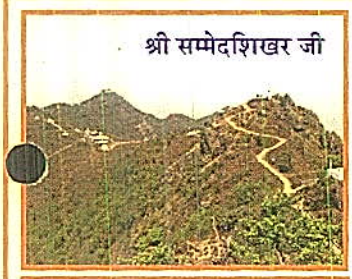

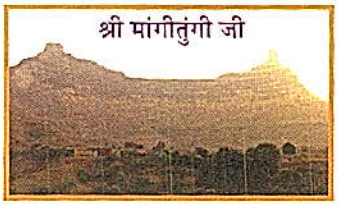


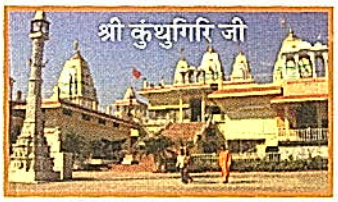

श्री 1008 पार्श्वनाथ भगवान, मेलसित्तामूर क्षेत्र

पतित पावन तरण तारण, हमारी फरियाद सुन लेना।
तेरे चरणों में मस्तक है, हमें अपना बना लेना।।

R.K. MARBLE GROUP

**Corporate Office :** Makrana Road, Madanganj-Kishangarh, Dist.Ajmer(Raj.)-305801
Tel : +91 1463 260101-10, Fax : +91 1463 250601
E-mail : info@rkmarble.com, Website : www.rkmarble.com

## जीवन में अक्षय निधि पाने हेतु अक्षय तृतीया पर आहार दान का संकल्प लें।

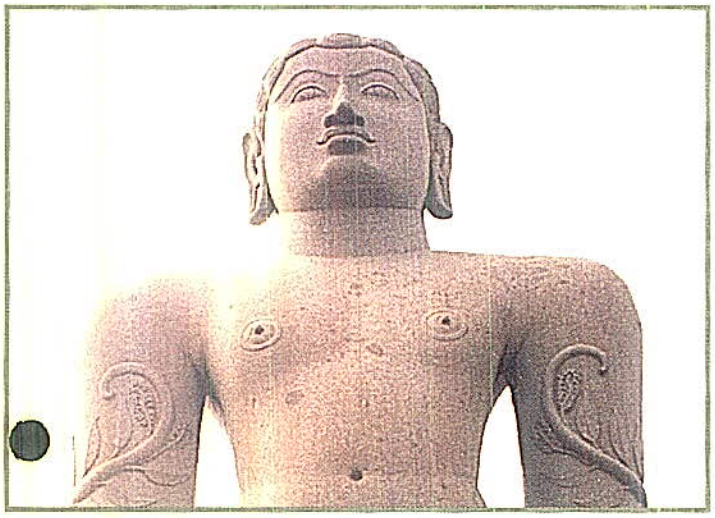

विगत माह में मैंने आपसे प्रथम तीर्थंकर से अंतिम तीर्थंकर के जन्मकल्याणक तक जैन एकता महोत्सव मनाने की अपील की थी। मुझे देशभर से खबरें मिली है कि हमारे निवेदन को समाजजनों ने हाथों-हाथ लिया और प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव से अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर का जन्मकल्याणक तक सभी ने खूब धर्म प्रभावना की और धर्मलाभ लिया।

आज देश में जगह-जगह जैन प्रतिमाएँ प्राप्त हो रही हैं जो इस बात को प्रमाणित करती हैं कि जैनधर्म ही प्राचीन है।

तीर्थंकर ऋषभदेव वर्तमान में अवसर्पिणी काल के प्रथम तीर्थंकर हुए, उनके पुत्र के नाम से इस देश का नाम भारतवर्ष पड़ा, इस बात को जैन ही नहीं हिन्दू पुराण भी मानते हैं, अग्निपुराण में आता है कि -

जरा मृत्यु भयं नास्ति धर्माधर्मो युगादिकम
नाधमं मध्यमं तुल्या हिमादेशात्तु नाभितः।
ऋषभों मरूदेव्यां श्रीपुत्रे शाल्य ग्रामे हरिर्गतः
भरताद भारतं वर्ष भरता समुति स्त्वभूत।।

इसका हिन्दी अर्थ यह है कि -

उस हिमवत प्रदेश में युग के आदि में जरा और मृत्यु का भय नहीं था, धर्म और अधर्म भी नहीं थे, अधम और मध्यम भाव नहीं था। सभी समान थे। वहाँ नाभिराजा, मरूदेवी से ऋषभ का जन्म हुआ। ऋषभ ने राज्य भरत को प्रदान कर संन्यास धारण कर लिया। भरत से इस देश का नाम भारतवर्ष हुआ।

इसी प्रकार मार्कण्डेय पुराण में भी उल्लेख है कि आग्नीध्र के पुत्र नाभि से ऋषभ हुए, उनसे भरत का जन्म हुआ जो अपने सौ भ्राताओं में अग्रज था, ऋषभ ने अपने ज्येष्ठ पुत्र भरत का राज्याभिषेक कर महाप्रव्रज्या ग्रहण की और पुलहाश्रम में उस महाभाग्यशाली ने तप किया। ऋषभ ने भरत को हिमवत् नामक दक्षिण प्रदेश शासन के लिए दिया था। अतः उस महात्मा भरत के नाम से इस देश का नाम भारतवर्ष हुआ।

इसी प्रकार नारद पुराण के पूर्णखण्ड, श्रीमद्भगवतगीता, पुरूदेव चम्पू आदि हिन्दू ग्रंथों व हमारे महापुराण आदि में इस आशय का वर्णन मिलता है।

मेरा यह सब लिखने का आशय यह है कि हम हमारी आने वाली पीढ़ी को हमारे गौरव से अवगत करायें, क्योंकि आज इतिहास को परिवर्तित करने की

कोशिश हो रही है, ऐसी स्थिति में हमें अपनी प्राचीन संस्कृति को जिंदा रखने की भरपूर कोशिश करनी चाहिये। हम एक समृद्धशाली संस्कृति के घटक हैं हमारे तीर्थ व उनकी प्राचीनता निर्विवाद है, हमें उनकी रक्षा का संकल्प करना है।

आज देश-विदेश में हमारी संस्कृति पर चिंतन हो रहा है, अध्ययन हो रहा है, क्योंकि हम प्रासंगिक हो रहे हैं। हमारे सिद्धान्त हमारी मान्यताएँ, हमारे ग्रंथों में लिखा हुआ लाखों-करोड़ों वर्ष बाद भी सत्य साबित हो रहा है। हमें किसी के प्रमाण-पत्र की आवश्यकता नहीं है। हमें केवल और केवल अपनी बातों को अच्छे से रखना आना चाहिये, हमारे आचरण से हमारी पहचान होनी चाहिये।

आने वाली २९ अप्रैल को हमारा एक और पर्व 'अक्षय तृतीया' आ रहा है। यह वो पर्व है जिसने हमें आहारदान की विधि सिखाई है। प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव को एक वर्ष तक आहार की विधि नहीं मिली थी, श्रावकों की अनभिज्ञता के कारण वे आहार नहीं ले पाए, राजा श्रेयांश के यहाँ जब विधिपूर्वक आहार हुआ वह भी इक्षु रस का, जिसे हम वैषाख शुक्ल तीज को मनाते हैं। आज इस पंचमकाल में हमें आहारदान की विधि ज्ञात है, यह हमारा परम सौभाग्य है, हम हमारे जीवंत तीर्थों को इक्षु रस का आहार दें, उनकी अनुमोदना करें, उनकी चर्या में सहभागी बनने का संकल्प लें यही भावना है। जो निरंतर विहार कर रहे हैं, उनकी सेवा के साथ हमारी संस्कृति के पोषक हमारी प्राचीनता के प्रमाण तीर्थों का भी ध्यान रखें।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार द्वारा भारतवर्ष के १०८ मंदिरों के जीर्णोद्धार का पावन पुनीत कार्य सम्पन्न कराया जा रहा है। हम सभी तीर्थ संरक्षण तीर्थ जीर्णोद्धार के कार्य में संलग्न होकर अपने द्रव्य का सदुपयोग करें, तीर्थों को बचाने का संकल्प लें, अपनी पीढ़ी को पराम्परा से अवगत करायें, उनके हाथों में अभिषेक का कलश दें, उनके हाथों से दान करायें, यही भावना है।

दिगम्बर जैन जगत का अन्तर्राष्ट्रीय आयोजन गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली महामस्तकाभिषेक २०१८ का शंखनाद हो चुका है, विश्वतीर्थ श्रवणबेलगोला में ७ फरवरी से २५ फरवरी तक होने वाले इस अनूठे आयोजन का कलश बुकिंग प्रारम्भ हो चुकी है। हम लोग बहुत है, कलश कम है, अधिक से अधिक कलश शीघ्रता से आरक्षित करें व प्रति बारह वर्ष में होने वाले इस महामस्तकाभिषेक महोत्सव में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करें। यह अवसर हमारे जीवन का स्वर्णिम क्षण है।

आईये! अक्षय तृतीया मनायें, तीर्थ बचायें, भगवान बाहुबली का महामस्तकाभिषेक करें, अपना जीवन धन्य करें।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को प्रतिमाह अपनी सहयोग राशि भिजवाकर पुण्यार्जन करें। ध्यान रहे तीर्थ रहेंगे तो हमारी संस्कृति कायम रहेगी, आईये! तीर्थों के प्रति तन-मन-धन से अपना सहयोग कर पुण्यार्जन कर मनुष्य भव सफल करें।

इसी भावना के साथ
अक्षय तृतीया पर्व की शुभकामनाओं सहित।

-सरिता एम.के.जैन

Sarita Jain

राष्ट्रीय अध्यक्ष

# परम्परा एवं आधुनिकता का अद्वितीय संगम होगा-महामस्तकाभिषेक-2018

-डॉ.अनुपम जैन, इंदौर

गत 12 अंकों से मैं इस पृष्ठ पर आप सबसे मुखातिब हो रहा हूँ। मुझे इस बात की खुशी है कि आप सब की प्रेरणा एवं अपने सहयोगियों के समर्थन से हम आपकी जैन तीर्थ वन्दना को सतत रोचक एवं ज्ञानवर्धक बना पा रहे हैं। यह सिलसिला जारी रहेगा। संवाद को आगे बढ़ाते हुए मैं आप सबसे अनुरोध कर रहा हूँ कि जब भी तीर्थयात्रा पर जायें अपने प्रत्यक्ष अनुभव के आधार पर उस तीर्थ के विकास हेतु व्यावहारिक सुझाव हमें भेजें। हम जैन तीर्थवन्दना के एक स्तम्भ में इसे प्रकाशित करेंगे।

श्रवणबेलगोल (कर्नाटक) में सदियों से हो रहे महामस्तकाभिषेक की सुदीर्घ परम्परा में 2018 का महामस्तकाभिषेक अद्वितीय होगा। परम पूज्य स्वास्तिश्री भट्टारक कर्मयोगी चारुकीर्ति महास्वामी जी के मार्गदर्शन एवं भा.दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी तथा महोत्सव समिति की अध्यक्षा बहन श्रीमती सरिता जी, तीर्थक्षेत्र कमेटी के महामंत्री जी श्री संतोष जी पेंढ़ारी तथा उनके सहयोगियों की टीम द्वारा देशव्यापी भ्रमण के माध्यम से अनेक मुनिसंघों को गत 01 वर्ष में दिये गये निमंत्रणों, निवेदन के फलस्वरूप पट्टाचार्य श्री वर्द्धमानसागर जी महाराज, आचार्य श्री पुष्पदन्तसागर जी महाराज, उपाध्याय श्री ऊर्जयन्तसागर जी महाराज आदि शताधिक मयूर पिच्छी धारी संत संघ सहित श्रवणबेलगोला की ओर विहार कर रहे हैं। सैकड़ों दिगम्बर संतों की महामस्तकाभिषेक के समय पावन उपस्थिति की हमारी परम्परा है। 2018 में भी इस परम्परा का निर्वाह होगा एवं हम सबको एक बार पुन: इस अलौकिक दृश्य को निहारने का अवसर प्राप्त होगा।

कुछ दिनों पूर्व मुझे एक मित्र के माध्यम से महामस्तकाभिषेक महोत्सव-2018 का मोनोग्राम प्राप्त हुआ। कलाकार ने इस महान तीर्थ की प्रशस्त परम्पराओं एवं मांगलिक प्रतीकों का कुशलता से मोनोग्राम में समावेश किया है। श्रीफल युक्त रजत मंगल कलश, जयजिनेन्द्र, सम्मान मुद्रा में ऐरावत हाथी, त्रिछत्र, भगवान गोम्मटेश की चित्ताकर्षक मूर्ति, मांगलिक अभिषेक, पुण्यवती भक्त गुल्लिकायज्जी सब कुछ तो आ गया है। संक्षिप्तत: मोनोग्राम तीर्थ की परम्पराओं का प्रतीक है।

प्राकृत जैनागमों की भाषा है। आचार्य गुणधर कृत कषायपाहुड, आचार्य धरसेन, पुष्पदन्त एवं भूतबलि कृत षट्खंडागम, आचार्य कुन्दकुन्द का सम्पूर्ण साहित्य, आचार्य मतिवृषभ की तिलोयपण्णत्ती आदि सब कुछ प्राकृत में है। श्वेताम्बर परम्परा मान्य जैनागम भी प्राकृत की ही एक शैली अर्द्धमागधी में रचे गये हैं। फलत: प्राकृत साहित्य एवं संस्कृति विषयक प्राकृत अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का श्रवणबेलगोला में 3-6 नवम्बर 2017 के मध्य आयोजन किया जाना परम्पराओं के संरक्षण: हेतु उठाया गया एक सामयिक कदम है। महोत्सव से 3 माह पूर्व इस सम्मेलन के आयोजन से जहाँ प्रतिभागियों को पूज्य महास्वामी जी के सान्निध्य एवं सतत उपस्थिति का लाभ मिलेगा वहीं स्वामी जी भी देश-विदेश के विभिन्न केन्द्रों पर चल रही प्राकृत अध्ययन की गतिविधियों से परिचित हो सकेंगे।

आंग्ल भाषा-भाषी विद्वानों द्वारा प्राकृत की गाथाओं का वहाँ सस्वर पाठ आज आवागमन के आधुनिक साधनों के कारण ही संभव हो सका है वहीं सुधी भारतीय विद्वानों द्वारा खोजी गई नवीन प्राकृत पांडुलिपियाँ विदेशी विद्वानों को शोध के नये क्षितिज देगी। इस सम्मेलन में आधुनिक संसाधनों एवं तकनीक द्वारा परम्पराओं का संरक्षण देखना सुखद होगा।

1981, 1993 एवं 2006 के महोत्सवों का मैं स्वयं साक्षी हूँ। 1981 में मैं विद्यार्थी रूप में गया था किन्तु 1993 में साहू अशोककुमार जैन (चेयरमेन-महोत्सव समिति) श्री डी. सुरेन्द्रकुमार (अध्यक्ष-युवा सम्मेलन), श्री एम.एस.मृत्युंजय कुमार (उपाध्यक्ष), श्री रमेश भंडारी (संयोजक) एवं श्री कैलाश वैद (सह संयोजक-युवा सम्मेलन) की समिति द्वारा गणित के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतु मुझे सम्मानित किया गया था। आधुनिकता में विश्वास रखने वाली नई पीढ़ी को 2018 के महामस्तकाभिषेक में भी कर्तव्यबोध कराने हेतु प्रमुखता से सम्मानित किया जाना चाहिये। क्या श्री प्रदीपकुमार सिंह कासलीवाल की अध्यक्षता एवं श्री हसमुख जैन गांधी के प्रमुख संयोजकत्व में बनी युवासम्मेलन आयोजन उपसमिति इस विषय पर विचार करेंगे? यदि वे ऐसा कोई उपक्रम करती है तो युवा समाज के अधिक निकट आयेगा। वे हमारी परम्पराओं को जानेंगे एवं सक्रिय होंगे।

हमारी समाज की प्रशिक्षित मानव शक्ति आदि जो व्यावसायिक कार्यों में लगी है। बड़ी कम्पनियों में कार्यरत है उन्हें समाज से जोड़ें, उनके ज्ञान का लाभ तीर्थ विकास में लें। उनके विचारों को तीर्थ प्रबन्धक 250 शब्दों में लिखकर भेजें या भिजवायें। हम उनको सादर प्रकाशित करना चाहेंगे।

# जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

**मुखपत्र**

वर्ष 7 अंक 10 अप्रैल 2017



| | |
|---|---|
| श्रीमती सरिता एम.जैन | अध्यक्ष |
| श्री प्रदीप जैन पी.एन.सी. | उपाध्यक्ष |
| श्री वसंतलाल एम.दोशी | उपाध्यक्ष |
| श्री नीलम अजमेरा | उपाध्यक्ष |
| श्री पंकज जैन | उपाध्यक्ष |
| श्री हुकम जैन 'काका' | उपाध्यक्ष |
| श्री संतोष पेंढारी | महामंत्री |
| श्री शिखरचंद पहाड़िया | कोषाध्यक्ष |
| श्री विनोद बाकलीवाल | मंत्री |
| श्री वीरेश सेठ | मंत्री |
| श्री शरद जैन | मंत्री |
| श्री खुशाल जैन सी.ए. | मंत्री |

प्रधान संपादक
प्रो.अनुपम जैन, इंदौर

संपादक
उमानाथ दुबे

परामर्श मंडल

डॉ. भागचन्द जैन 'भास्कर', नागपुर
श्री शांतिलाल जैन जांगड़ा, उदयपुर
प्रो.डॉ.अजित दास, चेन्नई
प्रो.डी.ए.पाटील, जयसिंगपुर
श्री अनिलकुमार जोहरापुरकर, नागपुर
श्री स्वराज जैन, दिल्ली
श्री राजेन्द्र महावीर, सनावद



कार्यालय
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन : 022-2387 8293 फैक्स: 022-23859370
e-mail : tirthvandana4@yahoo.com
e-mail : tirthvandana4@gmail.com
Website : www.digamberjainteerth.com



मूल्य

| | | |
|---|---|---|
| वार्षिक | : | 300 रुपये |
| त्रिवार्षिक | : | 800 रुपये |
| आजीवन (दस वर्ष) | : | 2500 रुपये |


## इस अंक में


| | |
|---|---|
| जीवन में अक्षय निधि पाने हेतु अक्षय तृतीया | 3 |
| परम्परा एवं आधुनिकता का अद्वितीय संगम होगा-महामस्तकाभिषेक-2018 | 5 |
| तीर्थों के संरक्षण एवं विकास में युवाओं की भूमिका | 7 |
| अक्षय तृतीया से पवित्र है हस्तिनापुर की धरती | 11 |
| कलशों से भरा हुआ है बाहुबलि दर्शन | 13 |
| श्रवणबेलगोला के बाहुबली | 16 |
| श्रवणबेलगोला में कृत्रिम पांव जोड़न शिबिर सम्पन्न | 1[illegible] |
| परम पूज्य मुनिद्वय श्री अमोघकीर्तिजी एवं मुनि श्री अमरकीर्तिजी महाराज की प्रेरणा | 19 |
| दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र चन्द्रप्रभुजी कूकस | 22 |
| शाश्वत ट्रस्ट ने मानव सेवा में बढ़ाया एक और कदम | 23 |
| वर्तमान की सर्वोच्च आवश्यकता जैन धर्म गुरुओं एवं समाज के कर्णधारों ... | 26 |
| गुणवत्तायुक्त शिक्षा व शैक्षिक संस्थाओं की आवश्यकता | 28 |


## गोम्मटेश्वर महामस्तकाभिषेक की तिथियाँ

**तं गोम्मटेशं पणमामि णिच्चं**

बाहुबली महामस्तकाभिषेक का उद्घाटन
: 7 फरवरी, 2018

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव और अन्य कार्यक्रम
: 8 फरवरी, 2018 से 16 फरवरी, 2018

महामस्तकाभिषेक शुभारंभ
:17 फरवरी, 2018

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी. पी. रोड, मुंबई के सेविंग खाता क्र. 13100100008770, IFSC CODE BARB0VPROAD अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी. पी. टैंक, मुंबई के खाता क्रमांक 001210100017881, IFSC CODE BKID0000012 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें।


पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादकों का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

# तीर्थों के संरक्षण एवं विकास में युवाओं की भूमिका

- डॉ. वारिश जैन, इन्दौर

तीर्थ हमारी धार्मिक परम्परा की अहिंसामूलक संस्कृति के द्योतक हैं। ये हमारी आस्था को आधार देने वाले ऐसे पवित्र स्थान हैं जहाँ हमारा मस्तक स्वयं झुक जाता है और हम अपनी आत्मा को प्रफुल्लित कर पाते हैं। सांसारिक विरक्ति से दूर हम इन पवित्र स्थानों पर एक विशेष शांति और आनंद का अनुभव करते हैं। इन पवित्र तीर्थों के विकास में युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। युवा वर्ग अपनी विशेष ऊर्जा और उल्लास के कारण तीर्थ विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

**अष्टापद आदिश्वर स्वामी, वॉसुपूज्य चंपापुर नामी।**
**नेमिनाथ स्वामी गिरनार, वन्दौ भाव सहित उरधार।।**
**चरम तीर्थंकर चरम शरीर, पावापुर स्वामी महावीर।**

## भावना-

तीर्थ का अर्थ है- जो तिरा दे या पार करा दे अथवा जो तिरने या पार हो जाने में सहायक हो, अतएव जिस धर्म मार्ग के आश्रय से आत्मोन्नयन करके जन्म-मरण एवं दुख रूप संसार-सागर से पार हो कर मुक्ति प्राप्त की जा सके उसे धर्म तीर्थ कहते है और उसके उद्धारक एवं व्यवस्थापक तीर्थकर कहलाते हैं। उन आत्मजेता तीर्थकर प्रभुओं के आदर्श का आलंबन लेकर मोक्ष मार्ग की एकनिष्ठ साधना करने वाले निष्पृह निष्परिग्रही साधु जंगम तीर्थ कहलाते हैं। तीर्थकर एवं अन्य मोक्षमार्गी महानुभावों के जीवन से संबद्ध भूमियाँ, स्थल आदि स्थावर तीर्थ कहलाते हैं। संसार में इस शब्द का अर्थ पवित्र स्थान के रूप में रुढ़ हो गया है। जैन तीर्थों से अभिप्राय है:- वह पवित्र स्थान जिसको जैन पूजते और मानते हैं।

संसार विरक्त महापुरुष प्रकृति के एकांत-शांत स्थानों में विचरते हैं। वे उच्च पर्वतमालाओं, मनोरम उपत्यकाओं, गहन गुफाओं एवं वनों में जाकर साधना में लीन होते हैं। इन्हीं पवित्र स्थानों को तीर्थ कहा गया है। वस्तुत: तीर्थ वह विशेष स्थान है जहाँ पर किसी साधक ने साधना करके आत्मसिद्धि को प्राप्त किया है। वह स्वयं तारण-तरण हुआ है और उस क्षेत्र को भी अपनी भवतारण शक्ति से संस्कारित कर गया है।धर्म मार्ग के महान प्रयोग उस क्षेत्र में किए जाते है- मुमुक्षु जीव तिल-तुष मात्र परिग्रह का त्याग करके मोक्ष पुरुषार्थी बनते हैं। वे वहाँ पर आसन लगाकर तपश्चरण, ज्ञान और ध्यान का अभ्यास करते हैं। अंत में कर्मशत्रुओं तथा राग-द्वेषादि का नाश करके यहीं से परमार्थ को प्राप्त करते हैं। इसी लिए ये तीर्थ स्थान परम पूज्य माने गये हैं।

## प्रकार-

दिगंबर जैन समाज में तीर्थ क्षेत्र तीन प्रकार के माने गये हैं- सिद्ध क्षेत्र (निर्वाण क्षेत्र), कल्याणक क्षेत्र और अतिशय क्षेत्र।

निर्वाण क्षेत्र:- निर्वाण क्षेत्र वे क्षेत्र हैं जहाँ तीर्थकरों अथवा किन्हीं मुनिराज का निर्वाण हुआ हो अर्थात उन्हें मोक्ष प्राप्त हुआ हो। जिस स्थान पर निर्वाण होता है, वहाँ इन्द्र और देव पूजा करने के लिए आते हैं।जहाँ तीर्थकरों का निर्वाण होता है उस स्थान पर सौधर्म इन्द्र चिन्ह बना देते हैं। आचार्य समंतभद्र ने स्रोत में भगवान नेमीनाथ की स्तुति करते हुए बतलाया है कि उर्ज्जयन्त (गिरनार) पर्वत पर इन्द्र ने भगवान नेमिनाथ के चरण चिन्ह उत्कीर्ण किए थे। अनेक निर्वाण भूमियाँ है परंतु पाँच क्षेत्र ऐसे है जहाँ से तीर्थकरों ने साधना में लीन रह कर मोक्ष की प्राप्ति की है। इन क्षेत्रों से असंख्य मुनिगण भी मोक्ष गए है। कैलाश पर्वत से जैन धर्म के आदि तीर्थंकर भगवान ऋषभदेवजी, चम्पापुर मन्दारगिरि पर्वत से वॉसुपूज्य स्वामी, गिरनार पर्वत से नेमीनाथजी एवं पावापुरी से वर्तमान शासन नायक भगवान महावीर स्वामी ने मोक्ष प्राप्त किया एवं अन्य बीस तीर्थंकर परम पावन सम्मेद शिखर जी से मोक्ष पधारे हैं। इसके अतिरिक्त और भी कई निर्वाण क्षेत्र हैं जिनका उल्लेख निर्वाण काण्ड में प्राप्त होता है।

कल्याणक क्षेत्र:- कल्याणक क्षेत्र वे क्षेत्र है जहाँ तीर्थकर का गर्भ, जन्म, तप और केवलज्ञान कल्याणक हुआ हो। जैसे-अयोध्या, मिथिलापुरी, हस्तिनापुर, काशी, कुण्डलपुर (विहार) आदि। निर्वाण स्थान के साथ ही जैन धर्म में तीर्थंकर भगवान के गर्भ, जन्म, तप और केवल ज्ञान कल्याणक के पवित्र स्थानों का भी विशेष महत्व है। तीर्थंकर कर्म प्रकृति जैन सिद्धांत में सर्वोपरि पुण्य प्रकृति मानी गई है। अन्य सभी प्रकृतियाँ उसकी अनुसारिणी हो जाती है। यही कारण है कि भावी तीर्थंकर के माता के गर्भ में आने के पहले ही वह पुण्य प्रकृति अपना सुखद प्रभाव प्रकट करती है और गर्भ में आने के छह मास पूर्व से गर्भावस्था के नौ मास तक रत्न और स्वर्ण वृष्टि होती है उनका गर्भावतरण और जन्म स्वयं माता पिता और अन्य जनों के लिए सुखकारी होता है। इसलिए गर्भ एवं जन्म कल्याणकों का विशेष महत्व है, परंतु सबसे अधिक महत्व केवलज्ञान कल्याणक का है क्योंकि इसी अवसर पर तीर्थंकरत्व का पूर्ण प्रकाश होता है। अहिच्छ पार्श्वनाथ इसी प्रकार का कल्याणक क्षेत्र है जहाँ भगवान पार्श्वनाथ पर उपसर्ग हुआ और उन्हें केवल ज्ञान प्राप्त हुआ। यही वह कल्याणक है जहाँ लोकोपकार के बहाने भगवान द्वारा धर्म चक्र का प्रवर्तन होता है और जहाँ जीवमात्र को सुखकारी धर्मदेशना कर्णगोचर होती है।

अतिशय क्षेत्र- जहाँ किसी मंदिर, प्रतिमाजी से कोई अतिशय प्रकट हो वह अतिशय क्षेत्र कहलाता है जैसे महावीरजी, पदमपुराजी, देवगढ़जी आदि। इसके अलावा जो निर्वाण क्षेत्र अथवा कल्याणक क्षेत्र नहीं है वे सभी अतिशय क्षेत्र कहे जाते हैं। यहाँ पर अद्भुत और अतिशयकारी दिव्य प्रतिमाएँ और मंदिर मुमुक्षु के हृदय पर ज्ञान-ध्यान की शांतिपूर्ण मुद्रा अंकित करने में कार्यकारी होते हैं। अतिशय क्षेत्रों में दिव्य प्रतिमाएँ विराजमान होती हैं जो भक्तों के हृदय में सुख और शांति की पुनीत धारा बहा देती हैं। भक्त हृदय उन प्रतिमाजी के सम्मुख पहुँचते ही अपने आराध्य देव का

साक्षात अनुभव करता है। उनका गुणगान कर अलभ्य आत्मतुष्टि पाता है।

**तीर्थों का महत्व-**

**तीन लोक के तीर्थ जहाँ, नित प्रति वंदन कीजे तहाँ।**
**मनवचकाय सहित सिर नाय, वंदन करही भविक गुण गाय।**

तीर्थ क्षेत्र की धूल भी इतनी पवित्र होती है कि उसके संसर्ग से ही भक्तजन कर्ममल रहित हो जाते है, तीर्थ यात्रा करने से भव भ्रमण समाप्त हो जाता है, तीर्थ क्षेत्र पर द्रव्य लगाने से अक्षय संपदा प्राप्त होती है और तीर्थ क्षेत्र पर जाकर भगवान की शरण लेने से व्यक्ति स्वयं जगत पूज्य बन जाता है। आचार्य वसुनंदि भी कहते हैं-

श्री तीर्थपान्थरजसा विरजी भक्ति,
तीर्थषु विभ्रणतोन भवे भ्रमन्ति।
तीर्थ व्ययादिह नरा: स्थिर संपदा:
स्यू: पूज्या भवन्ति जगदीश मथा श्रयन्त:।

तीर्थ स्थान योगी की योग निष्ठा, ज्ञान ध्यान और तप साधना से पवित्र हो चुके होते हैं। पुराण पुरुषों के आश्रय स्थानों एवं उनके निमित्त कल्याणक स्थान की विशेष सिद्धि होती है। ध्यान ही वह अमोघ शस्त्र है जो पाप शत्रु को नाश करता है। पाप की पीड़ा से बचने के लिए भव्य जीव तीर्थों की शरण लेते हैं। लोक विश्वास के अनुसार तीर्थ वंदन से पाप मल धुल जाता है। तीर्थ वंदन एवं दर्शन से पवित्र उत्तम क्षमादि धर्म, विशुद्ध सम्यकदर्शन, निर्मल संयम और यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति होती है। जहाँ से मनुष्य शांति-भाव का पाठ उत्तम रीति से ग्रहण कर सकता है, वही तीर्थ है। जैन मत के माननीय तीर्थ उन महापुरुषों के पावन स्मारक हैं जिन्होंने आत्मशुद्धि की पूर्णता प्राप्त की है। शास्त्रों में तीर्थों की गणना मंगलों में की गई है। तीर्थ ही लोकोत्तर शुचित्व के योग्य उपाय है, प्रबल निमित्त है।

**तीर्थ विकास एवं संरक्षण में युवाओं की भुमिका-**

वर्तमान युग में तीर्थ विकास एवं संरक्षण के लिए संगठित होकर कार्य करने की आवश्यकता है। युवा वर्ग का इसमें अत्यधिक महत्त्वपूर्ण योगदान है। वर्तमान युग में तीर्थों की असुरक्षा ने एक विकराल समस्या का रूप धारण कर लिया है। जैनेतर समाज द्वारा जैन तीर्थों पर कब्जा कर लेने की कई घटनाएं सामने आ रही है। कुछ दिनों पूर्व गिरनारजी की सुरक्षा के संदर्भ में जैन मुनि पर हुए हमले ने संपूर्ण जैन समाज को सोचने पर विवश कर दिया। इस तरह की तीर्थ समस्याओं के समाधान व तीर्थ के विकास के लिए संगठित होकर शक्ति व लगन के साथ कार्य करने की आवश्यकता है, जो युवा वर्ग के प्रयास के बिना असंभव है। युवा वर्ग अक्षय शक्ति का स्रोत माना जाता है और ऐसी ही शक्ति की हमें तीर्थ विकास में आवश्यकता है। युवाओं के प्रयास से तीर्थो में भवन निर्माण, जीर्णोद्धार, तीर्थ सुरक्षा, परिवहन व्यवस्था, शासन द्वारा सहायता प्राप्ति आदि कार्य आसानी से किये जा सकते हैं। तीर्थों की व्यवस्था को सुचारु रुप से चलाने के लिए युवाओं का योगदान सर्वाधिक आवश्यक है। हमारे तीर्थों की असुरक्षा का सबसे प्रमुख कारण यह है कि यह क्षेत्र अविकसित ग्रामीण एवं सुदूर इलाकों में है जहाँ पर जैनों का निवास अत्यल्प है इसी कारण इनकी सुरक्षा हमेशा संदिग्ध रहती है। इन क्षेत्रों में केवल तीर्थ यात्रियों का आवागमन ही होता है और जैन समाज की उपस्थिति नगण्य ही होती है इसी का लाभ उठाकर जैनेतर लोग हमारे तीर्थों पर कब्जा कर लेते हैं और हमे अपने ही तीर्थों को पुन: अधिकार में लेने के लिए अपार धन, श्रम एवं समय खर्च करना पड़ता है। युवा वर्ग अधिक से अधिक तीर्थों की वंदना कर एवं तीर्थ स्थलों की जानकारी प्राप्त कर तीर्थ विकास में महत्वपूर्ण योग दे सकते हैं। इस दिशा में कई संगठन जैसे दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी आदि सराहनीय प्रयास कर रहे हैं जिसमें भी युवाओं का योगदान अप्रतिम है। तीर्थक्षेत्रों के प्रचार प्रसार में भी युवा वर्ग महत्वपूर्ण कार्य कर सकता है। युवा वर्ग लोगो को जैन तीर्थों के बारे में अधिक से अधिक जानकारी उपलब्ध करा कर उन्हें तीर्थवंदना के लिए प्रेरित कर सकता है। आवागमन के साधनों की जानकारी जुटाना एवं तीर्थों की व्यवस्था को सु रूप से चलाना ये दोनों ही कार्य युवाओं की सहायता के अभाव में लगभग असंभव है। युवा वर्ग यदि संगठित होकर कार्य करें तो कोई भी तीर्थ, विकास एवं उन्नति कर सकता है, भले ही वह कितने ही पिछड़े हुए क्षेत्र में क्यों न स्थित हो। सम्मेदशिखरजी एवं कुण्डलपुर (बिहार) इसके सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। इन तीर्थों के विकास के कारण यात्रियों का रुझान यहाँ की ओर अधिक हुआ है और अब हजारों की संख्या में यात्री प्रतिवर्ष यहाँ आते हैं। वैसे तो गिरनारजी, श्रवणबेलगोला, चम्पापुरी, पावापुरी, सोनागिर आदि लगभग सभी तीर्थक्षेत्रों में आशातीत विकास हुआ है परंतु अभी भी कई क्षेत्र ऐसे हैं जहाँ विकास की महती आवश्यकता है। युवा वर्ग को ऐसे तीर्थों के विकास की ओर अधिक धयान देना चाहिए। अपने बल, साहस, शक्ति एवं उत्साह के बल पर युवा वर्ग जैन तीर्थों की काया पलट सकते हैं।

जैनेतर समाज द्वारा विभिन्न जैन तीर्थों की ऐतिहासिकता एवं प्रमाणिकता को नष्ट करने के कई प्रयास किये जा रहे है साथ ही जैन तीर्थ की प्रतिमाओं को ब्रम्हा, विष्णु, महेश आदि की प्रतिमाएँ बताकर कई तरह की भ्राँतियां फैलाई जा रही हैं और जैनों को भ्रमित किया जा रहा है। इस दिशा में युवाओं को अधिक जागृत हो कर कार्य करने की आवश्यकता है। युवाओं को जैन धर्म का गहन अध्ययन करके शंकाओं का निवारण करना चाहिए और समाज में फैली भ्रांतियों को दूर करना चाहिए। जैन तीर्थों से संबंधित विषयों में किए गये शोधकार्य भी इस तरह की भ्रांतियों को दूर करने में सहायक हो सकते हैं। प्रांतीय और केन्द्रीय सरकारों का ध्यान भी तीर्थ विकास की ओर आकर्षित करने में युवा वर्ग अधिक कारगर साबित हो सकता है क्योंकि युवा शक्ति की ओर शासन का ध्यान अधिक रहता है और वह भी युवा शक्ति के सामने नतमस्तक हो जाती है। शोध कार्यों द्वारा भी तीर्थ क्षेत्र संबंधी प्रचार साहित्य को बढ़ावा दिया जा सकता है और तीर्थ यात्रियों को अधिक जागरुक बनाया जा सकता है। तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत महासंघ, शास्त्री परिषद विद्वत परिषद, दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी आदि

संस्थाएं युवाओं के सहयोग से तीर्थ विकास की दिशा में निस्सन्देह ही सराहनीय कार्य कर रही है। भगवान महावीर जन्मभूमि विवाद से संबंधित भ्रांतियों के निराकरण में तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत महासंघ ने महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। इस संदर्भ में विदित है कि विगत चार-पांच दशकों में भ्रांतिवश वैशाली- कुण्डग्राम को महावीर भगवान की जन्मभूमि माना जाने लगा था परंतु युवाओं के सार्थक परिश्रम से पुन: कुण्लपुर को महावीर जन्मभूमि के रूप में मान्यता प्राप्त हो गई है।

आर्क्योलॉजिकल सर्वे भी हमारे जैन तीर्थ की ऐतिहासिकता की प्रामाणिकता सिद्ध करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस प्रकार के सर्वे में भी युवाओं की भागीदारी बढ़ती जा रही है जो कि जैन तीर्थों के विकास के लिए शुभ संकेत है। आज जैन युवा अन्य युवाओं की अपेक्षा अधिक शिक्षित एवं जागरुक माना जाता है और अपने इसी ज्ञान का प्रयोग वह तीर्थों के विकास में कर रहा है। जैन युवा तन मन व धन से तीर्थों के विकास में सहयोग दे रहे है परंतु इस क्षेत्र में सबसे बड़ी बाधा समय की कमी है। जैन युवा बौद्धिक एवं आर्थिक स्तर पर तो समृद्ध है परंतु वह तीर्थों को समय नही दे पा रहा है इसी कारण तीर्थों के विकास की गति कुछ धीमी है। युवा वर्ग यदि सगंठित हो कर पूरी लगन व श्रम से कार्य करे तो तीर्थ विकास के क्षेत्र में आशातीत सफलता प्राप्त की जा सकती है। तीर्थों में भवन निर्माण, आवागमन व्यवस्था, भोजन व्यवस्था एवं अन्य व्यवस्थाओ में युवाओं की भागीदारी अनिवार्य है।

**उपसंहार-**

जैन तीर्थ हमारे गौरव एवं गरिमा के प्रतीक हैं। यहाँ हम अपने तीर्थंकरों एवं महापुरुषों का स्मरण करते हैं कि कैसे वे अपूर्व धन-संपदा को त्याग कर प्रकृति के एकांत, शांत स्थलो में विचरते रहे। उच्च पर्वत मालाओं, मनोरम वनों में जा कर साधना में लीन रहे। भावी पीढ़ियों के लिए ऐसे महान तीर्थों को बचाना हम सबका कर्तव्य है। तीर्थों के द्वारा ही भावी पीढ़ी हमारी जैन संस्कृति के भव्यतम रूप से अवगत हो सकती है। युवा वर्ग यदि इस क्षेत्र में सहयोग करते हैं तो हम अपनी इन महानतम धरोहरों को भावी पीढ़ी तक हस्तांतरित करने में सफल होंगे, अन्यथा हमारी परंपरा, सभ्यता एवं संस्कृति पर एक गहन संकट उत्पन्न हो सकता है। इस भावी संकट से उबरने के लिए हम सभी युवाओं को तन-मन-धन से तत्पर रहना होगा तभी तीर्थ विकास का सपना साकार होगा और हम सभी आगामी कालों मे प्रकृति के सुरम्य वातावरण में बसे तीर्थों की वंदना का आनंद लेकर अपनी आत्मा का हित कर सकेंगे।

**कर पावन है वही कि जो सत्कर्म करें नित।**
**जिव्हा वही पवित्र करे जो श्रीजिन का गुणगान।।**
**सार्थकता है पग पाने की तभी कि जब हम।**
**करें सहित उल्लास पुण्य तीर्थों की ओर प्रयाण।।**

## भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, मुंबई के सहयोग से श्री 1008 संकटहर पार्श्वनाथ दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र जटवाड़ा पर पानी की टंकी का निर्माण

जटवाडा पर पानी की टंकी निर्माण हेतु भूमिपूजन करते हुए महाराष्ट्र अंचल के अध्यक्ष श्री प्रमोदकुमार कासलीवाल, आर्किटेक्ट श्री विष्णु कूंजर, क्षेत्र के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्रकुमारसा साहूजी साथ में श्री माणिकचंद गंगवाल, श्री ललित पाटणी, श्री प्रकाशचंद कासलीवाल, श्री देवेन्द्रकुमार काला, ॲड. एम.आर.बडजाते, श्री बिपीन कासलीवाल, श्री भरत ठोले, डॉ. रमेश बडजाते, श्री शांतीनाथ गोसावी, श्री मनोज साहूजी, श्री रमणलाल गंगवाल, श्री केतन ठोले, श्री निलेश काला, श्री अशोक गंगवाल, श्री जयचंद ठोले, श्री सूधीर साहूजी, श्री संजय साहूजी, श्री कमलचंद कासलीवाल, डॉ. केदार कूंजर, श्री संदीप कासलीवाल, श्री महावीर साहूजी, पं. तासकर, साई असोसिएटस के श्री जाधव, श्री बबन वाटपाडे, श्री हूकूमचंद काला आदि महानुभाव उपस्थित रहे।

# गोमटेश्वर भगवान श्री बाहुबली स्वामी महामस्तकाभिषेक

## महोत्सव 2018 श्रवणबेलगोला

नेतृत्व : परमपूज्य जगदगुरु कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारुकीर्ती भट्टारक महास्वामी

## मंदिर जीर्णोद्धार उपसमिती


**PRESIDENT**
**SMT. SARITA M.K. JAIN** CHENNAI
GOMMATESHWARA BHAGWAN SRI BAHUBALI
SWAMI MAHAMSTAKABHISHEK MAHOTSAV - 2018
SHRAVANBELAGOLA.
MO. 9841018370
saritaj@quibusresources.com

**PRESIDENT**
**SANTOSH JAIN (PENDHARI)**
मंदिर जीर्णोद्धार उपसमिती
JAIN ACID & CHEMICALS
CENTRAL AVENUE, GANDHIBAGH
NAGPUR - 32, (M.S.)
PH. 0712-2766923/2761283 MOB. 9822225911
EMAIL : jainacid77@gmail.com


प्रति,
श्रीमान ध.

सादर जय जिनेन्द्र !

भारत देश में हमारे अनेक श्रद्धास्थान है, आराधना स्थल है, तीर्थक्षेत्र है। यह उर्जा के स्थान है और शक्ति एवं सामाजिक संपर्क के केंद्र भी है। इस सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण, संवर्धन, जीर्णोद्धार करना हमारा प्राथमिक दायित्व है, और मौलिक कर्तव्य भी है। इस आराध्य को संवर्धीत करने हेतू हम सभी अग्रणी रहे है, तथा समय समय पर आप उदार वृत्तीयो के धनी रहे है।

इस महत्वपूर्ण बिंदुओ पर परमपूज्य जगदगुरु कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारुकीर्ती भट्टारक स्वामी इन्होने हम सबका ध्यान आकर्षित करते हुवे, श्री श्रवणबेलगोला एवं आसपास के 50 मंदिरो का जीर्णोद्धार, भगवान बाहुबली स्वामी महामस्तकाभिषेक 2018 के पूर्व करने का संकल्प किया है।

इस जीर्णोद्धार योजना के तहत कार्य सुरु हो चुका है। जीर्णोद्धार कार्य के अंतर्गत दिवारो में पडे दरार की मरम्मत, बरसात के पानी को सुरक्षित करना, सि.सि.टी.व्ही एवं सोलर लाईट लगाना, पीने के पानी की व्यवस्था, बिजली की व्यवस्था,सुरक्षा के लिए कम्पौंड वॉल, दिवारों की उचाँई बढाना, रास्ते की मरम्मत, सूचना फलक लगवाना आदि अनेक कार्य सम्मिलित है।

इस कार्य को करीब दो करोड रुपये व्यय का अनुमान है। इस कार्य को सफलतम करन के लिए आपकी दानराशी, सहकार्य की अपेक्षा करते है। कृपया आपसे नम्र निवेदन है की आपकी राशी SDJMIMC Trust (R) : GBMMC-2018 , इस नाम से RTGS/NEFT द्वारा निम्न पत्ते पर भेजने की कृपा करे। दान राशी के लिए **80 G** का प्रमाणपत्र दिया जायेगा

CORPORATION BANK
BRANCH : Shravanabelagola
A/c No. 007200101033552
IFSC : CORP0000072

:: ADDRESS ::
The Office Secretory,
Javeri Dharmshala,Near KSRTC Bus Station,
Shravanabelagola - 573135,Channaravapatna Taluka.
Hassan District,(Karnatka). E-mail : secretarymmc18@gmail.com

## * जीर्णोद्धार योजना का स्वरुप *

1) रु. 11,00,000 (रुपये ग्यारह लाख) या उससे अधिक राशी देनेवाले दान दाताओं का नाम भंडार बसदी (श्री चौवीसी मंदिर) श्रवणबेलागोला के मंदिर के दर्शनी भाग में ग्रेनाईट से अंकित किया जायेगा एवं महामस्ताभिषेक महोत्सव के समय पर एक जीर्णोद्धार कलश उन्हे प्रदान किया जायेगा।
2) एक बडे मंदिर का जीर्णोद्धार - अपेक्षीत राशी रु. 10.00 लाख
3) एक मध्यम मंदिर का जीर्णोद्धार - अपेक्षीत राशी रु. 5.00 लाख
4) एक छोटे मंदिर का जीर्णोद्धार -अपेक्षीत राशी रु. 3.00 लाख
(उपरोक्त राशी प्रदान करेनवाले का नाम जिनालय के दर्शनी भाग मे मार्बल पर अंकित किया जायेगा।)
5) रुपये 35101-00 दान राशी देनेवाला का नाम जिनालय मे मार्बल पर लिखा जायेगा तथा विशेषांक में प्रकाशित किया जायेगा।
6) रु. 11,111/- दानराशी देनेवाला का नाम विशेषांक मे प्रकाशित किया जायेगा।

आपसे नम्र निवेदन है कि , कृपया आप अपनी चंचला लक्ष्मी का उपयोग इस पूण्यशाली योजना में लगाकर हमें सहयोग प्रदान करे। आपके पत्र एवं दानराशी की अपेक्षा करते हुवे।

धन्यवाद!

मंदिर जीर्णोद्धार उपसमिती
गो.भ. बाहुबली महामस्तकाभिषेक समारोह 2018

विनीत
संतोष पेंढारी, अध्यक्ष

# अक्षय तृतीया से पवित्र है हस्तिनापुर की धरती

- विजय कुमार जैन , हस्तिनापुर

**इच्छु रस का हुआ पारणा आखा तीज महान।**
**जय जय ऋषभदेव भगवान जय जय ऋषभदेव भगवान....**

अक्षय तृतीया का पावन पर्व हस्तिनापुर की धरती से जुड़ा हुआ है। अक्षय तृतीया का प्राचीन इतिहास हस्तिनापुर तीर्थ से ही प्रारंभ हुआ है। वैशाख सुदी तीज को अक्षय तृतीया के नाम से जाना जाता है। अक्षय का अर्थ है जिस वस्तु का कभी क्षय नहीं अर्थात् वस्तु समाप्त न हो और यह महीना वैशाख का था और तिथि तृतीया थी। इसलिए इसका नाम अक्षय तृतीया पड़ा। लोगों का मानना है कि इस दिवस किया जाने वाला कार्य वृद्धि को प्राप्त होता है। भगवान ऋषभदेव को हुए कोड़ा कोड़ी वर्ष (करोड़ो करोड़ो साल) व्यतीत हो गये। लेकिन आज भी अक्षय तृतीया का पर्व मनाने के लिए देश एवं विदेश से जैन श्रद्धालु हस्तिनापुर की धरती पर आते हैं। जैन श्रद्धालु आहार दान की महिमा का वर्णन करते हुए इस पवित्र धरती पर आते है। इस पवित्र दिवस का ये महत्व है कि बिना मुहूर्त के ही हजारों विवाह सम्पन्न होते हैं। अगणित गृह प्रवेश आदि मांगलिक कार्य सम्पन्न किये जाते हैं और इसे सर्वश्रेष्ठ मुहूर्त माना जाता है।

भगवान ऋषभदेव ने अयोध्या में जन्म लिया एवं प्रयाग (इलाहाबाद) की धरती पर जैनेश्वरी दीक्षा को धारण किया जो कि इस युग की प्रथम दीक्षा थी। क्योंकि भगवान ऋषभदेव वर्तमान चौबीसी के प्रथम तीर्थकर हैं। युग के प्रथम तीर्थकर हैं। दीक्षा को धारण करते ही ध्यान लगाकर भगवान बैठ गये। भगवान के साथ में 4 हजार राजाओं ने दीक्षा ग्रहण की। 6 माह पश्चात भगवान ऋषभदेव आहारचर्या बतलाने के लिए कि जैन साधुओं को किस प्रकार आहार करना चाहिए लोगों को इस विधि का ज्ञान हो सके इसलिए आहार के लिए निकले लोगों को ज्ञान ही नहीं था कि जैन साधुओं को आहार किस प्रकार से करना चाहिए। महायोगी ऋषभदेव जिस ओर कदम रखते थे वही के लोग प्रसन्न होकर के बड़े आदर के साथ उन्हें प्रणाम करते थे और कहते थे कि भगवान प्रसन्न हो जाईये कहिये क्या काम है, कितने ही लोग भगवान के पीछे-पीछे चलने लगते थे, अन्य कितने ही लोग बहुमूल्य रत्न लाकर भगवान के सामने कहते थे कि हे देव! इन रत्नो को ग्रहण कर लीजिए और कितने ही लोग अन्य प्रकार के पदार्थ वस्त्र आभूषण माला, कन्या, भवन, सवारी आदि दिखा करके कहते थे कि प्रभु इसे ग्रहण कर लीजिए और हमें कृतार्थ कीजिए। तीर्थकर भगवान अपनी चर्या में विघ्न मानकरके आगे बड़ जाते थे। लोग निराश होकर के प्रभु की और देखते रह जाते थे और सोचते थे कि किस प्रकार से भगवान को उनकी मनचाही वस्तु देकर के हम कृतार्थ हो सकें। इस प्रकार से भगवान को 6 माह व्यतीत हो जाते है। कुल मिलाकर के 1 वर्ष पूर्ण हो जाता है और महामुनि कुरुजांगल देश के आभूषण ऐसे हस्तिनापुर नगर के समीप पहुँचते हैं।

हस्तिनापुर नगरी के शासक राजा सोमप्रभ और उनके भाई श्रेयांस कुमार थे। तभी पिछली रात्रि में राजा श्रेयांस को उत्तम-उत्तम 7 स्वप्न दिखाई देते है। प्रात: वह अपने स्वप्नों को अपने भाई सोमप्रभ से उन स्वप्नों को बताकर उनका फल पूछते हैं। प्रथम स्वप्न में मैने सुमेरुपर्वत देखा है, दूसरे में एक कल्पवृक्ष देखा है जिसकी शाखाओं पर आभूषण लटक रहे हैं, तीसरे में सिंह देखा है, चौथे में बैल, पांचवे में सूर्य और चंद्रमा, छठे में लहरों से सुशोभित समुद्र तथा सातवे में अष्ट मंगल द्रव्यों को हाथों में धारण किये व्यंतर देवों को देखा है। इन स्वप्नों का उत्तम फल जानकरके अति प्रसन्न चित्त हो करके चिन्तन ही कर रहे होते हैं कि तभी सुनने में आता है कि तीर्थकर ऋषभदेव हस्तिनापुर में प्रवेश

कर चुके हैं। चारो ओर भारी जन समुद्राय एकत्र होकर के भगवान का दर्शन करता है। उनके चरणों की पूजन करता है।

कोई कहता है कि अहो बड़े आश्चर्य की बात है कि ये तीन लोक के स्वामी भगवान ऋषभदेव समस्त राज्य वैभव का त्याग कर पूर्ण दिगम्बर होकर आज अकेले ही इस पृथ्वीतल पर विचरण कर रहे हैं। इतने में ही द्वारपाल द्वारा सूचना प्राप्त होती है कि प्रभु समीप में ही पधार चुके हैं और इधर ही आ रहे हैं। राजा सोमप्रभ और श्रेयांस महल के बाहर आ जाते हैं, प्रभु के चरणों में नम्रता पूर्वक नमस्कार करते हैं। इतने में ही राजकुमार श्रेयांस को पूर्वभव का जाति स्मरण हो जाता है कि जब मैं राजा बज्रजंघ की रानी श्रीमती की पर्याय में था तब मुनियों को दिये गये आहार दान की सारी विधि स्मरण में आ जाती है। महाप्रभु ऋषभदेव को देखते ही राजा श्रेयांस एवं सोमप्रभ ने हे भगवन्! अत्रो-अत्रो, तिष्ठो-तिष्ठो आहार जल शुद्ध है, मन शुद्धि, वचन शुद्धि, काय शुद्धि आहार-जल शुद्धि है। मुद्रा छोड़िये आहार ग्रहण करिये नवधा भक्ति पूर्वक पड़गाहन कर लेते है एवं अष्ट द्रव्य से पूजन कर नमस्कार करते है ऐसे निवेदन कर प्रभु से आहार ग्रहण करने हेतु प्रार्थना करते है भगवान ऋषभदेव व करपात्र में आहार प्रारंभ कर इच्छुरस (गन्ने) का आहार देते हैं। उसी समय आकाश से देवों द्वारा रत्न वृष्टि होने लग जाती है नाना प्रकार सुगंधित पुष्पों की वृष्टि होने लग जाती है। देवता भी धन्य है यह दान धन्य यह पात्र धन्य ये दाता ऐसे शब्दों से आकाश गुंजायमान कर देते है एवं देवों द्वारा किये पाँच अतिशय पंचाश्चर्य कहलाते है राजा श्रेयांस प्रभु को आहार देने में मग्न हैं देवतागण हर्ष विभोर होकर के पंचाश्चर्य की वृष्टि कर रहे है। प्रभु ऋषभदेव आहार करके वन की ओर प्रस्थान कर जाते हैं। उस दिन सारे नगर में गन्ने के रस का प्रसाद वितरण किया जाता है। लेकिन फिर भी गन्ने का रस समाप्त नही होता है। वह अक्षय हो जाता है।

राजा श्रेयांस ने प्रथम आहार दान दिया क्योंकि इस युग के प्रथम तीर्थकर भगवान ऋषभदेव थे। तो यह प्रथम आहार की अनुमोदना की। यहाँ गन्ने की खेती थी, भरत चक्रवर्ती ने अयोध्या से पूरी सेना के साथ हस्तिनापुर आकर के राजा श्रेयांस व सोमप्रभ के पुण्य की अनुमोदना की। हस्तिनापुर में गन्ने की खेती खूब पाई जाती है उस दिन से इस धरती पर गन्ने की खेती भी अक्षय हो गई। समीपवर्ती सभी क्षेत्रों में गन्ने की खेती होती है एवं ऐसा मानते है कि जैन साधु जहाँ पर भी विराजमान हैं उनको आज के दिन गन्ने के रस का आहार करवाया जाता है। जो लोग वर्षीय उपवास करते हैं वे पारणा करने के लिए हस्तिनापुर की धरती पर आकर के अपना उपवास समाप्त करके पारणा इच्छु रस से करते है और अपने आप को धन्य मानते है यह इस भूमि का असीम पुण्य है। अक्षय तृतीया आखा तीज के नाम से भी जाना जाता है।

हस्तिनापुर जम्बूद्वीप स्थल पर जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की पावन प्रेरणा से आहार महल का निर्माण किया गया है। जिसमें भगवान ऋषभदेव व राजा श्रेयांस की प्रतिमा विराजमान की गई है। प्रत्येक वर्ष इस प्रतिमा के समक्ष इच्छुरस का आहार करवाया जाता है एवं आने वाले भक्त भगवान को आहार देने का सौभाग्य प्राप्त करते है एवं गन्ने के रस का प्रसाद ग्रहण करते है। अक्षय तृतीया का पावन पर्व हस्तिनापुर से

ही प्रारंभ हुआ है इसकी पहचान ही हस्तिनापुर से है। तब से लेकर के आज तक करोड़ो वर्ष बीत गये लेकिन मान्यता को लेकर भक्तगण आज भी इस धरती पर आ करके अक्षय तृतीया के दिन तीर्थ पर विराजमान साधुओं को आहार देना के अपने जीवन को धन्य मानते है।

श्री 1008 चंद्रप्रभू दिगंवर जैन अतीशय क्षेत्र, मांडल पर यात्री निवास निर्माण हेतु भूमिपूजन करते हुए अंचल मंत्री श्री विपीन कासलीवाल, अंचल प्र.का.स. श्री केतन ठोले, क्षेत्र के अध्यक्ष श्री सुनील जैन, विश्वस्त श्री प्रविण जैन आदि सम्मिलित हुए।

# कलशों में भरा हुआ है बाहुबलि दर्शन

डा० ममता जैन, पूना

सृष्टि की जब जब नई कोंपले फूटी, आलोक की नई आभा छिटकी तभी प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के द्वारा बताए मार्ग पर उनके पुत्र पुत्रियां भी चले और समाज के लिए आदर्श बने। भगवान बाहुबलि उन्हीं के यशस्वी पुत्र थे श्रवणबेलगोला की इस पावन धरा पर उनकी प्रतिमा ने विश्व का आश्चर्य बनकर श्रमण संस्कृति के स्वरूप को विश्व को समझाया यह तपस्या भूमि है, यह साधना भूमि है यहां भक्ति में सरलता चलती है ,आस्था चलती है।

कामदेव, अप्रतिम योद्धा, भगवान बाहुबलि का व्यक्तित्व मात्र पौराणिक व्यक्तित्व नहीं है अपितु युगों युगों के बाद भी उनके जीवन दर्शन सम्पूर्ण आर्यावर्त में मानों कर्म का साक्षात कल्पवृक्ष ही है जिसकी छत्र छाया में श्रमणत्व एवं श्रावकत्व दोनों को नये नये वरदानों को प्राप्त करने का अमृत फल प्राप्त हुआ।

भगवान बाहुबलि ने एक नया दृष्टिकोण विकसित किया, उन्होंने अपने भाई का मान मर्दन ही नहीं किया अपितु सारे विश्व को एक सन्देश दिया कि धन के व्यूह चक्र में फंसा राज अपनी शक्ति के बल पर किसी को क्षत विक्षत धराशायी करने को तत्पर रहता है, ऐसे सत्तान्ध को सबक सिखाना ही चाहिए, इसीलिए उन्होंने सामान्य से सामान्य जन जीवन को प्रभुता के सम्मुख लघुता की मानसिकता से मुक्त किया अभिमान और विजयोन्मत्तता की जमी हुई मोटी तह को उन्होंने अपने दृढ़ हिमालयी व्यक्तित्व के कर्म जल से धो डाला, धन बल को नकार कर, उन्होंने भाई को सोचने को विवश किया कि जो अपने भाई को ही स्वाधीन नहीं रहने देना चाहता वह भला कैसे किसी की अस्मिता की रक्षा करेगा ऐसा राजा प्रजा का सेवक नहीं हो सकता। इसलिए अपनी प्रिय प्रजा के लिए उन्होंने अपने चक्रधारी भाई को भी न केवल ललकारा अपितु उसे आकाश से धरातल पर पटकदिया। साथ ही बता दिया जिस राजा को परिवार पर भी बल प्रयोग करते संकोच नहीं होता उस राजा को सबक सिखाना चाहिए।

युद्ध में विजयी रहने के पश्चात तक्षशिला नरेश बाहुबलि ने यह भी बताया कि वे शासन व्यामोही नहीं हैं नहीं उनका उददेश्य कोई विजेता बनकर अपना प्रभुत्व बढाना है इसीलिए तत्काल उनका मन्तव्य भी सबको स्पष्ट हो गया जब उन्होंने अपने जीवन को कर्ममयी दीक्षा में ढाला, तपाया, उन्होंने परिवार के इस युद्ध में किसी एकभी प्रजाजन को आहत नही होने दिया, आज की परिवारवादी राजनेताओं केलिए उनका जीवन संदेश उदाहरण है। अपने बाहुबल को ही आधार बना कर कहा : जिसके पास हाथ है वे क्या नहीं कर सकते। "अहो सिद्धार्थता तेषां सन्तीह पाणयः" और मल्ल युद्ध जीत कर बाहुबलि जी ने मोह मल्ल को जीतने के लिए एक क्षण भी नही गवाया। राजा और योगी दोनों ही रूपों मे वे अद्वितीय रहे। तपस्या के लिए खड़े हुए तो अन्तिम पल तक मोक्ष प्राप्ति तक बैठे ही नही, आहार लिया ही नही और चरणों में झुका दिया उन सबको धन, प्रभुसत्ता, अहन्न्यता ही जिनके लिए सब कुछ था। योग और भोग दोनों की पराकाष्ठा की सारी परिभाषाएं संसार के सामने थी। प्रत्येक मानव ने मनुष्यता नया मेरूदण्ड प्रदान करके स्वार्थ हीन कर्म के महाव्रत की रूपरेखा दी उनके त्यागमय जीवन की एक एक कली हमारे सामने खिली और जीवन की सच्चाई और नियमितता खुलकर चारों और फैल गई।

आज भारतीय मानव का मस्तिष्क एक परिवर्तन के युग से गुजर रहा है इस समय उसके लिए सबसे बडा उपदेश व सन्देश यही हो सकता है कि मनुष्य अपना मूल्य समझे राजसत्ता को उसका दायित्व एकव्यक्ति भी बता सकता है और सिंहासन हिला भी सकता है, प्रजातन्त्र के लिए इससे बढ़कर प्राणमंत्र हो नहीं सकता। जाति, धन अथवा जन्म के कारण कोई विशेषाधिकार का राज्य में स्थान नहीं होना चाहिए। बाहुबलि जी का भरत की आधीनता को नकारना के पृष्ठ में उनके परमपुरूषार्थ एवं उनके व्यक्तित्व के अनेक पहलू उजागर होते हैं।

भगवान बाहुबलि ने अपनी चेतना को महत्तर बनाकर सबको आत्मीय स्नेह के सूत्र से जोड़ा। आदिनाथ के युग में भी वे पहचान बने और पिता से पूर्व मोक्ष के द्वार खोले। आज भी तीर्थंकरों के समकक्ष स्थित उनकी ही प्रतिमा जिनालयों में एकदम पहचानी जाती है और पूजी जाती है। अपनी कामनाओं पर पैनी दृष्टि रखते हुए उन्होंने भीतर और बाहर को सतुंलित रखा। स्वयं को विराट बनाकर मानवता से जोड़ा। उनकी अहिंसा सही मायने में जैन आगम में वर्णित अहिंसा है। यह अहिंसा वीरता की प्रतीक है, यही अहिंसा बताती है कि अहिंसा कायरता नहीं है मानवता के इतिहास की अन्यतम उपलब्धि है। युद्ध और अहिंसा दोनों के लिए ही उन्होंने एक राह बना दी और पृथ्वी को शीतलता दी। उन्होंने जिस चेतना को अपनाया उसी को जीवन के प्रयोग और खोज की जीवन्त गाथा के रूप में परिणति दी।

महामस्तकाभिषेक का आयोजन एकसंकल्प है, भगवान बाहुबलि की विशिष्टता का प्राकट्य भाव है, उनके विराट व्यक्तित्व का प्रतिबिम्ब है, जन जन में उनकी प्रतिष्ठा का प्रमाण है, उन्हें अपने भीतर धारण करने का आह्वान है। कलश और कलशों का जल हमें बहुत कुछ कहता है जल केवल कलशों की शोभा नहीं होता अपितु उसमें अपने भी निर्मलता, पारदर्शिता, स्वच्छता, शुद्धता के साथ जीवन को चलाने बचाने की भी अद्भुत क्षमता होती है इस पवित्र एवं सुगन्धित द्रव को अपने घट में भरकर जीवन आगंन में रख लिया तो हमारा जीवन भी बाहुबलिमय होगा बाहुबलिकी उत्तुंग प्रतिमा हर युग में हर दृष्टिकोण से मनुष्य के मूलभूत प्रश्नों का उत्तर देती रहेगी और भगवान की दिव्य देशना एवं जीवन दर्शन को जन जन को समझाती रहेगी।

★★★★

# अतिशय क्षेत्र काटी-सांवरगाँव का 2 लाख रुपयों का चेक प्रदान!

सोलापुर की तपोभूमी श्राविका संस्थानगरी में प.पू. चारित्र्यचक्रवर्ती श्री 108 आचार्य शांतिसागरजी की परंपरा के पंचम पट्टाचार्य प.पू. वात्सल्यवारिधी श्री 108 वर्धमानसागरजी महाराज ससंघ सानिध्य में आपके भव्य-आगमन एवं ग्रंथराज धवलाजी के प्रकाशन समारंभ के दौरान बड़ी आत्मियता पूर्वक अतिशय क्षेत्र के जीणोद्धार एवं विकास को समर्पित भारतवर्षीय दि.जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा महाराष्ट्र अंचल के सोलापुर जिल्हे में स्थित अतिशय क्षेत्र काटी-सांवरगाँव के जीर्णोद्धार एवं विकास हेतु 2 लाख रुपयों की राशि का चेक क्षेत्र कमेटी को प्रदान किया गया। उक्त अवसर पर महाराष्ट्र अंचल के उपाध्यक्ष मा.श्री अनिलजी जमगे, मा. श्री हर्षवर्धनजी शहा, मा. श्री अरविंदजी दोशी, मा. श्री सी.आर.दोशी (सी.ए.), मा. श्री दीपकभाई शहा, मा. श्री शामजी पाटील आदि मान्यवरों द्वारा क्षेत्र को उक्त चेक की राशि प्रदान की गई। अंचल के उपाध्यक्ष मा.श्री अनिलजी ने बताया की उक्त क्षेत्र के विकास हेतु इसके पूर्व भी 3 लाख रु. की निधि क्षेत्र को प्रदान की गई है। क्षेत्र का चहूँमुखी विकास हो यही भावना करते हुए संबंधित क्षेत्र के पदाधिकारियों ने भाई अनिलजी का हार्दिक आभार व्यक्त किया।

सोलापूर नगरी में श्री वर्धमान सागरजी का भव्य स्वागत एवं ससंघ एवं समाज को आशीर्वाद देते हुए चेअरमेन श्री मनीष शहा, श्री निर्मल कुमार शहा, श्री दिपक शहा समाज वांधव

## भारतवर्षीय दिगम्बरजैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा बुरिया क्षेत्र को 3 लाख रुपये का अनुदान

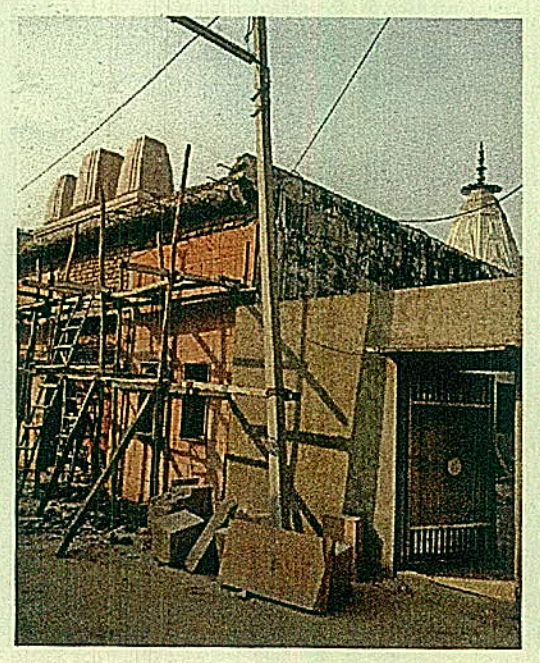

The village Buria in District Yamuna Nagar has a great historical significance. This now not so known village is revered as birthplace of Birbal, the famed advisor to great Mughal emperor Akbar. The archaeological excavations revealed a Stupa about 3 kms northwest of sugh, now the village Chaneti which is said to be 2000-2500 years old.

Shri 1008 Digambar Jain Mandir, Buria, is nearly 10 km from Yamuna Nagar railway station and 5 km from city Jagadhri. The building of Jain temple, Buria is acclaimed 250-300 years old by Archeology survey of India and the main statue of Bhagwan Suparshwanath, some other Jain Sculpture (paritmai) to be older than 600 years. There are three bedis, in the center is Bhagwan Suparshwanath, on its left side is chandraprabhu and right side is choubisi. Then there is one more bedi of padmawati mata. All these facts points towards prosper and a healthy society at one time. But Currently there are around 12 Jain families left in the village with the population census of meagerly 150 people.

Though in year 2007-08 we got some financial help from the Indian government and get constructed the hall. But the building of "garbh grah" i.e where the Jain Paritmaji are, is very old and needs maintenance. Here we are enclosing the estimate and looking forward for the hands.

भक्तामर विधान में सम्मिलित महामंत्री श्री संतोष जैन धर्मपत्नी श्रीमती स्मिता जैन, श्रीमती अरूणा काला, श्री संतोष काला, श्री शांतीलालजी (अध्यक्ष) श्री १००८ आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर अतिशय क्षेत्र (सराफा) नांदेड

श्री १००८ आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर अतिशय क्षेत्र (सराफा) नांदेड मे जैन तीर्थ इतिहास में पहली बार ता. २२/०३/२०१७ आदिनाथ जयंती से २०१८ आदिनाथ जयंती तक सकल दिगंबर जैन समाज द्वारा एक वर्ष तक प्रतिदिन भक्तामर विधान का आयोजन किया जा रहा है।

- डॉ. सौ. अरूणा रविंद्र काला

## यशवंतपुर से हासन वाया श्रवणबेलगोला प्रथम नई ट्रेन गोम्मटेश्वर एक्सप्रेस श्रवणबेलगोला स्टेशन पर स्वागत करते हुए पूज्य कर्मयोगी जगद्गुरु श्री चारुकीर्ति महास्वामीजी

- भरत कुमार काला

पूज्य स्वामीजी श्रवणवेलगोला स्टेशन पर श्रवणवेलगोला हासन की टिकट उपस्थितों को दिखाते हुए।

श्री गोम्मटेश्वर एक्स्प्रेस नई ट्रेन की आरती करते हुए पूज्य स्वामीजी, श्री ए. मंजू, श्रीमति एच डी खन्ना, श्री पुन्तेगौडा, श्रीवाळकृष्ण, श्री जिनेन्द्रकुमार जैन और अन्य समुदाय

# श्रवणबेलगोला के बाहुबली
## गोम्मटेश्वर रथयात्रा भ्रमण

पं. सुरेश जैन मारौरा, इन्दौर

देवाधिदेव गोम्मटेश्वर भगवान श्री बाहुबली स्वामी का महामस्तकाभिषेक 2018 जैन जगत का सार्वभौमिक आयोजन है। यह आयोजन परमपूज्य आचार्य श्री 108 वर्धमान सागर जी एवं समस्त आमंत्रित आचार्य, मुनि, श्रमणों के पावन सान्निध्य एवं पूज्य जगद्गुरु कर्मयोगी स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामी जी के नेतृत्व में सम्पन्न होगा।

श्री क्षेत्र श्रवणबेलगोला तीर्थस्थल की जानकारी तथा महोत्सव समिति द्वारा दी जाने वाली जनकल्याणकारी आयोजनों को जन-जन पहुँचाने तथा समस्त श्रद्धालुओं को महोत्सव में आमंत्रण करने हेतु रथयात्रा का भ्रमण पूरे देश में चलेगा।

रथयात्रा मुख्य संयोजक/ केन्द्रीय समिति से सम्पर्क कर रथयात्रा का भ्रमण अपने क्षेत्र/अपने नगर/ अपने गाँव में भव्यता से करावें, रथयात्रा का भव्य स्वागत करें। अधिक से अधिक महामस्तकाभिषेक कलश बुक कराकर पंचकल्याणक हेतु इन्द्र इन्द्राणी बनकर पुण्यार्जन कर सहयोग करें।

आप सभी समाज- जन महामस्तकाभिषेक महोत्सव में सादर आमंत्रित है।

**भगवान बाहुबली महामस्तकाभिषेक महोत्सव समिति-2018**

| अध्यक्ष | कार्याध्यक्ष | महामंत्री |
|---|---|---|
| श्रीमती सरिता एम.के.जैन चेन्नई | एस. जितेन्द्र कुमार, बैंगलोर | सतीशचन्द्र जैन (एस.जी.जे.) दिल्ली |
| मो.09841018370 | मो. 09845074331 | मो. 09810081861 |

मंत्रीगण- जयकुमार जैन-जयपुर, विनोद दोडडाणावर-बेलगाँव, सुरेश पाटिल-सांगली, महावीर गंगवाल-गुवाहाटी, प्रमोद जैन-दिल्ली

**रथयात्रा मुख्य संयोजक- पं.सुरेश जैन मारौरा, इन्दौर, मो. 08878102700**

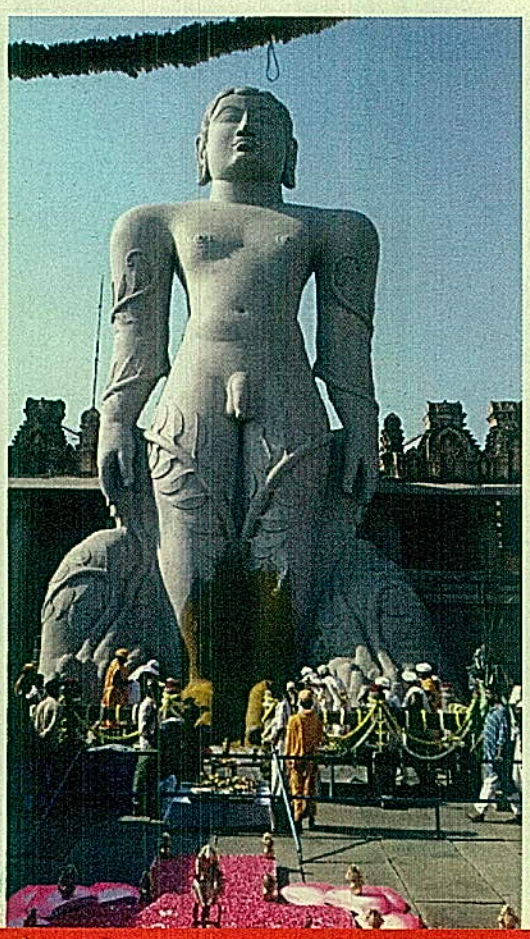

आज से लगभग 2500 वर्ष पहले सम्राटअशोक मौर्य साम्राज्य के संस्थापक चंद्रगुप्त मौर्य की तपो भूमि के दर्शनार्थ पधारे, उस समय यहाँ दिगम्बर मुनियों की प्रधानता और कल्याणी सरोवर की अनुपमता देखकर इसका नाम बदलकर श्रवणबेलगोला रखा। श्रवणबेलगोला कन्नड़ भाषा का नाम है।

श्रवणबेलगोला- सिरमौर है क्योंकि

श्रवण- श्रमण-जैन मुनि

बेल-धवल-श्वेत-सफेद

गोला-कोका-तालाब-सरोवर-जलाशय

अर्थात् श्रमणों का धवल सरोवर या शुभ जल पात्र श्रवणबेलगोला को संस्कृत भाषा में कहते हैं। आज भी उत्तर भारत में जैन बद्री के नाम से जानते और पूजते हैं।

देवाधिदेव भगवान बाहुबली के विभिन्न आयाम

1. भगवान बाहुबली तत्वार्थ सूत्र अध्याय 9 के तीन सूत्रों के प्रतिफल हैं।

(ए)- आस्त्रव निरोध: संवर: - मिथ्यात्व 5, अविरति 12, कषाय 25, योग 15, कुल 57 आस्त्रव के भेद है अर्थात् आस्त्रव का निरोध संवर है।

(बी)- सगुप्ति समिति धर्मानुप्रेक्षा परिषहजय चारित्रै:- गुप्ति 3, समिति 5, धर्म 10, अनुप्रेक्षा 12 परिषहजय 22 और चारित्र 5 से संवर होता है। इस प्रकार संवर के 57 भेद रुप है।

(सी)- तपसा निर्जरा च- तप से सवंर और निर्जरा होती है।

भगवान बाहुबली की मूर्ति संवर, निर्जरा और मोक्ष इन तीन तत्वों को प्रतिबिम्बित करती है। इसलिये मूर्ति 57 फुट की है।

2. श्री बाहुबली जी प्रथम कामदेव और चरम शरीरी थे।

3. श्री बाहुबली जी सर्वांग सुन्दर और अतुल बलधारी थे।

4. श्री बाहुबली जी भरत को पराजित कर पदेन चक्रवर्ती हुये।

5. श्री बाहुबली जी उद्भट्, स्वाभिमानी, स्वावलम्बी और महात्यागी थे।

6. श्री बाहुबली जी अपने राज्यपद की मर्यादा और कर्त्तव्य भावना से भरे थे।

7. श्री बाहुबली जी इस युग के प्रथम मोक्षगामी और भव्य महापुरुष थे।

8. श्री बाहुबली जी प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के पुत्र थे उनके पादमूल में अध्यात्मयोग विद्या सीखी थी। इनकी योग साधना अदभुत थी।

9. एक वर्ष की प्रतिमा योग साधना में वे अविचलित एक स्थान पर ही ध्यानस्थ रहे।

10. श्री बाहुबली जी पर बेलें (माधवीलता) चढ गई थी।

11. श्री बाहुबली जी पर सर्पो ने बाम्बी बना ली थी परन्तु वे अविचलित ध्यानमग्न रहे।

12. श्री बाहुबली जी ने राजत्याग और आहार त्याग ऐसा किया कि फिर मुड़कर भी नहीं देखा।

13. श्री बाहुबली जी त्याग, तपस्या, अभय, अहिंसा, अपरिग्रह, अशोषण, सम्मान, आत्म संरक्षण एवं कथनी करनी में एक रूपता के जीवन्त प्रतीक हैं।

14. श्री बाहुबली जी संयम-साधना और उत्कृष्ट तपस्या के आदर्श थे।

चैत्र शुक्ल 5 वि. सं. 1034 गुरुवार 13 मार्च 981 को ऐसी मूर्ति की प्रतिष्ठा हुई, चारों ओर जय-जय कार होने लगी, मूर्ति के निर्माता चामुण्डराय (गोम्मट) का नाम सार्थक करने हेतु गोम्मटेश बाहुबली नाम दिया और जय गोम्मटेश बाहुबली के नारों से आकाश गुंजायमान हो उठा। तं गोम्मटेशं पणमामि णिच्चं के स्वर से श्रवणबेलगोला का आकाश गुंजायमान हो उठा।

## श्रवणबेलगोल के युवा सम्मेलन के इन्दौर कार्यालय का शुभारम्भ

भगवान गोम्मटेश्वर बाहुबली के आगामी महामस्तकाभिषेक–18 के पावन प्रसंग पर श्रवणबेलगोल (कर्नाटक) में आगामी 28–29 अक्टूबर 17 को होने वाले राष्ट्रीय युवा सम्मेलन के इन्दौर कार्यालय का शुभारम्भ 5 मार्च को महावीर ट्रस्ट, इन्दौर पर सम्पन्न हुआ। ज्ञातव्य है कि युवा सम्मेलन आयोजन समिति के अध्यक्ष श्री प्रदीपकुमारसिंह कासलीवाल एवं राष्ट्रीय प्रमुख संयोजक श्री हसमुखजैन गांधी मनोनीत किये गये हैं।

5 मार्च को मध्यान्ह 2.00 बजे सम्पन्न कार्यालय शुभारम्भ समारोह को मांगीतुंगी के पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी का सान्निध्य प्राप्त हुआ। मु.अ. के रूप में धर्मस्थल से पधारे श्री सुरेन्द्र जी हेगडे (बैंगलोर) एवं वि.अ. के रूप में श्री अशोक सेठी (बैंगलोर), श्री प्रदीप जैन (PNC) (आगरा), डॉ. अनुपम जैन (इन्दौर), डॉ. जीवनप्रकाश जैन (हस्तिनापुर), श्री टी.के. वैद (इन्दौर) तथा शताधिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

श्री हसमुख जैन गॉधी ने युवा सम्मेलन की रुपरेखा प्रस्तुत करते हुए बताया कि Heritage Walk के अलावा विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय उपलब्धियॉ अर्जित करने वाले 18 जैन युवाओं का भी सम्मेलन में सम्मान किया जायेगा। इसका संयोजन डॉ. अनुपम जैन करेंगे। महावीर ट्रस्ट के बारे में पं. जयसेन जैन ने बताया तथा अतिथियों का सम्मान श्री कीर्ति पाण्डया एवं बाहुबली पाण्डया ने किया।

– प्रदीप गोयल

श्री महावीर ग्रुप ऑफ इण्डस्ट्रीज

संस्थापक एवं निदेशक
स्व. दयाचन्द जैन (फ्रीडम फाईटर)
मो. 98141 75293

IN THE SERVICE OF NATION 1970 ESTD.

मैनेजिंग डायरेक्टर
राजेन्द्रकुमार जैन
मो. 98140 92613

| जगराओ (पंजाब) | श्री गंगानगर (राजस्थान) | जम्मू (कश्मीर) | कोलकाता (बंगाल) |
|---|---|---|---|
| 223191, 223103 | 2494412 | 2547876 | 98304 86979 |
| 222 093, 228962 | 2494413 | 2547239 | 99973 4272 |

# श्रवणबेलगोला में कृत्रिम पांव जोड़न शिबिर सम्पन्न

- भरतकुमार काला, मुम्बई

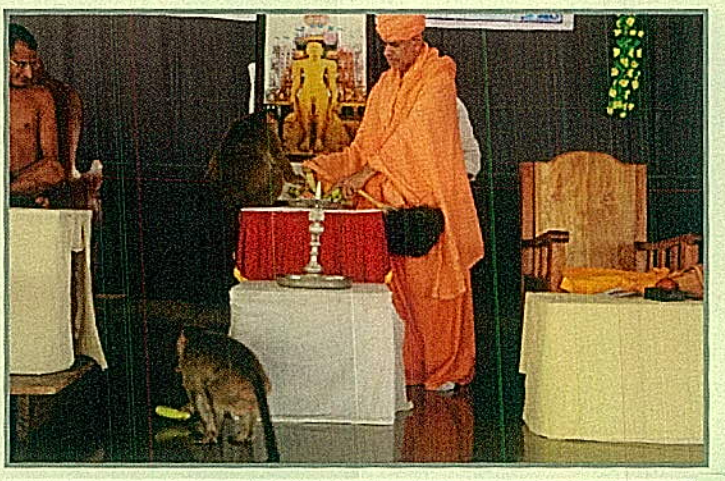

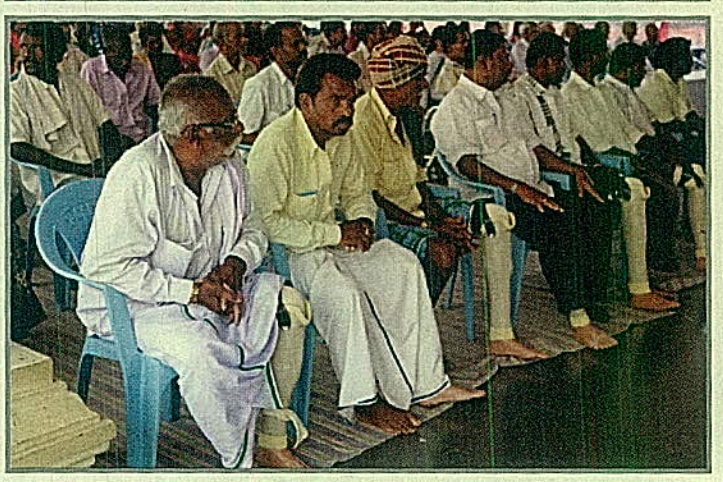

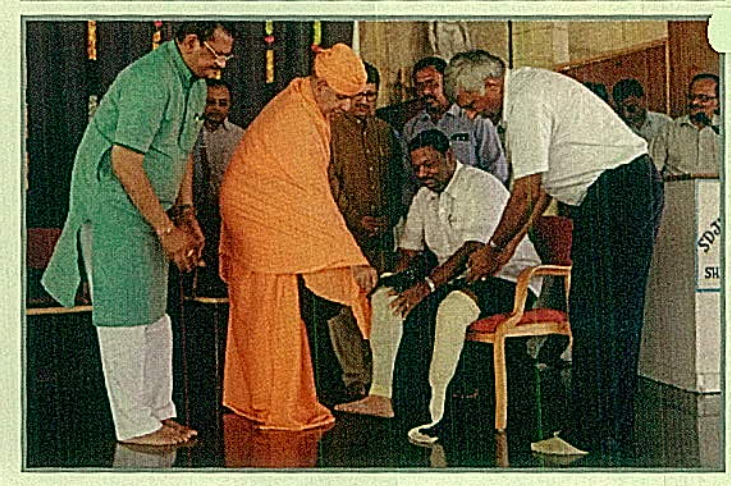

श्री क्षेत्र श्रवणबेलगोला में श्री गोम्मटेश्वर बाहुबली भगवान के बारहवर्षीय महोत्सव फरवरी 2018 के अंतर्गत जन कल्याण योजना उप समिति द्वारा दिनांक 2 अप्रैल 2017 रविवार को सुबह 11.30 बजे से गरीब परिवार के सदस्य जो किसी भी कारण से पैर से चलने में असमर्थ है को कृत्रिम पैर प्रदान करने का कार्यक्रम सोत्साह सम्पन्न हुआ।

दिनांक 31 मार्च को ऐसे करीब 60 लोग प्राथमिक चिकित्सा में सम्मिलित हुए थे। उन सभीका तज्ञ डॉक्टोरों ने सर्वप्रथम निरीक्षण किया नापादि लिये। तदनुसार कृत्रिम पैर तैयार किये और दिनांक 2 अप्रैल को सबको समारोह पूर्वक पैरों को लगा दिया। ऐसे कई मरीज थे जिनके दोनों पैर जंघा तक कटे हुए या खतम् हुए थे। एक सदस्य तो पचास साल का जिसे श्रवणबेलगोला से 516 किलो मीटर दूर एक अनाथाश्रम के बाहर छोड चले गये थे। वर्षों से यह आश्रम उसका पोषण करता है। उसे हाथ से एक महिला उठाकर इस शिबिर में लायी थी। उसके भी दोनों पैर को कृत्रिम पैर प्रदान किए गये। तब भी वह चलने मे समर्थ नहीं था। तथापि दया का आधार बनाकर उसके लिए भी प्रयत्न किए तज्ञ डॉक्टरों ने। धन्य है वह डॉक्टर ऐसे 60 लोगों को कृत्रिम पैर प्रदान किये गए।

प.पू. आचार्य श्री चंद्रप्रभु सागरजी महाराज ने पूज्य भट्टारक श्री की उदारता, चिंतन, दूरदृष्टी, करुणा दया की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे दीन दु:खियों की सेवा की व्यवस्था करना, नि:शुल्क प्रदान करना महामस्तकाभिषेक से बड़ा दिव्य कार्य है। मस्तकाभिषेक के माध्यम से जन कल्याण की योजनाओं को प्रवाहमान करना एक महान कार्य है। अभी नेत्रोपचार,वृद्धोपचार असहाय्य महिला मदद, दंत (बत्तीसी) प्रदान जैसे कार्य यहाँ निशुल्क आयोजित हुए हैं। श्री चम्पालालजी भंडारी एवं उनके परिवार ने इस शिविर हेतु नहीं बल्कि, नेत्रचिकित्सा आदि के लिये भी उदारमन से आर्थिक सहयोग दिया है। पुण्योदय से प्राप्त इस चंचला लक्ष्मी का श्री भंडारी परिवार गरीब परिवारों की चिकित्सा कार्य में बड़ी मनपूर्वक रुचि रखे हुए है। बेंगलोर में एक बहुत बड़ा चिकित्सा भवन जिसमें चिकित्सा की वर्तमान समय की सारी श्रेष्ठ से श्रेष्ठ उपकरण, औषध, बेड, डॉक्टर नर्स आदि सदैव उपलब्ध रहते हैं। पूर्णत नि:शुल्क या नाम मात्र की राशि लेकर सफल उपचार बिना प्रसिद्धि की अपेक्षा के करते हैं।

वास्तविक में ऐसे मानवतावादी व्यक्तित्त्व बड़े दुर्लभता से सौभाग्य से जन्म लेते हैं।

भंडारी परिवार का खूब-खूब आभार।

## परम पूज्य मुनिद्वय श्री अमोघकीर्तिजी एवं मुनि श्री अमरकीर्तिजी महाराज की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के तत्त्वावधान में श्री वीर शासन प्रभावना ट्रस्ट, मुम्बई की ओर से प्राप्त सहयोग राशि से तमिलनाडु के प्राचीन मंदिरों का जीर्णोद्धार

Tamilnadu is one of the strongholds of Jainism. It has a long history transcending more than 3000 years; Although once spread from Kanyakumari now it is confined to the northern part of Tamilnadu with 135 beautiful temples which are very old and many of them are ancient; Unable to withstand the fury of the nature many of them got damaged in various ways; as these temples have to be renovated, a request was made for help; help came spontaneously from Veershasun Prabhavana Trust, Mumbai for the major repair and renovation of 4 temples, 1 dedicated to Lord Rishaba, 2 for Bhagwan Vardhamana Mahavir and one for Sri Munisuvratanatha Thirthankara.

With the blessings of 108 Muni sri Amogh keerti ji and 108 Muni sri Amar keerti ji maharaj (Disciple of Acharya sri 108 Devnandi ji Maharaj), who have intiated the Jeernodhar work. Tamil Jains whole heartedly thank Smt. Ruby not only for the donation for renovating the 4 temples but also for her keen interest to visit these temples in person and for giving suggestions to preserve the architectural features and the antiquity of the temples; we are overwhelmed by her keen interest in preserving the ancient heritage of jains in Tamil Nadu; definitely her guidance and suggestions will help us to protect the heritage of digamber jains here in this part of the country; madam's visit is bound to generate a lot of interest among the dharmic souls in North India for extending a helping hand for the renovation of temples here in Tamil Nadu.

Tamil Digamber Jaina community take this opportunity to convey gratitude to BDJTKC and Sri M.K.Jain and Smt. Sarita M.K.Jain President, for their help and guidance for the welfare of Jain community and the preservation Jaina Heritage in Tamil Nadu heritage.

We are also thankful to Sri. Kamal Tholiya, Sri. Dinesh Sethi for their coordination with trust.

★★★★

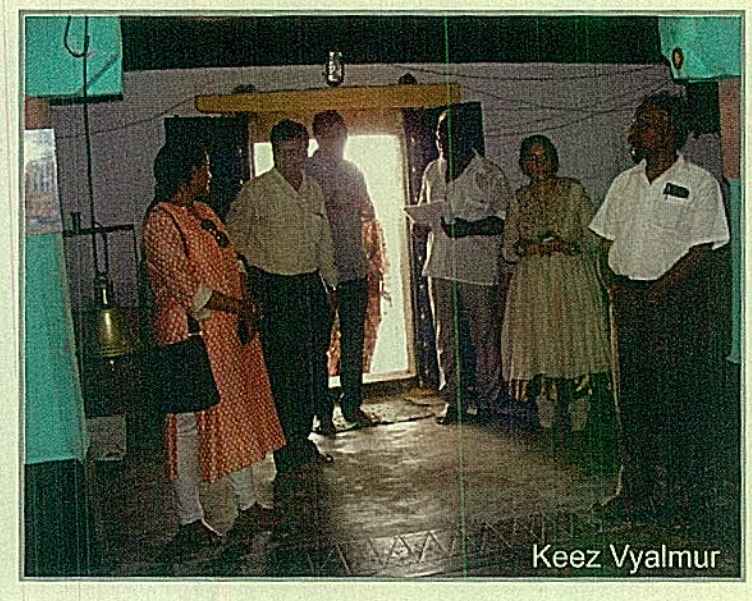
Keez Vyalmur

Ponnur Hills

Keez Vyalmur

Gingee Krishnapuram

Gingee Krishnapuram

Gingee Krishnapuram

Vazapandal

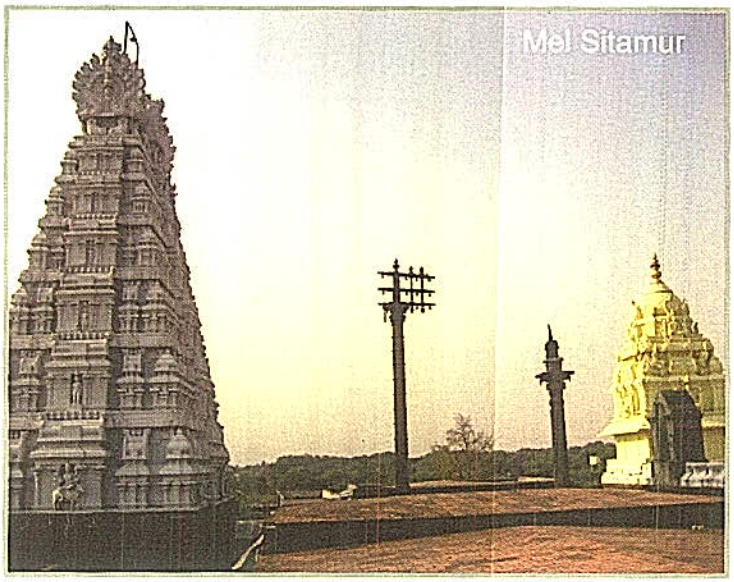
Mel Sitamur

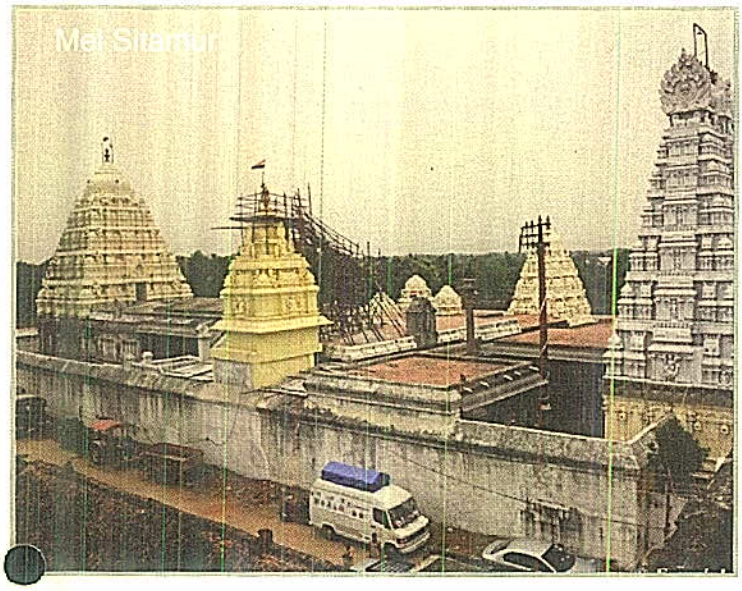
Mel Sitamur

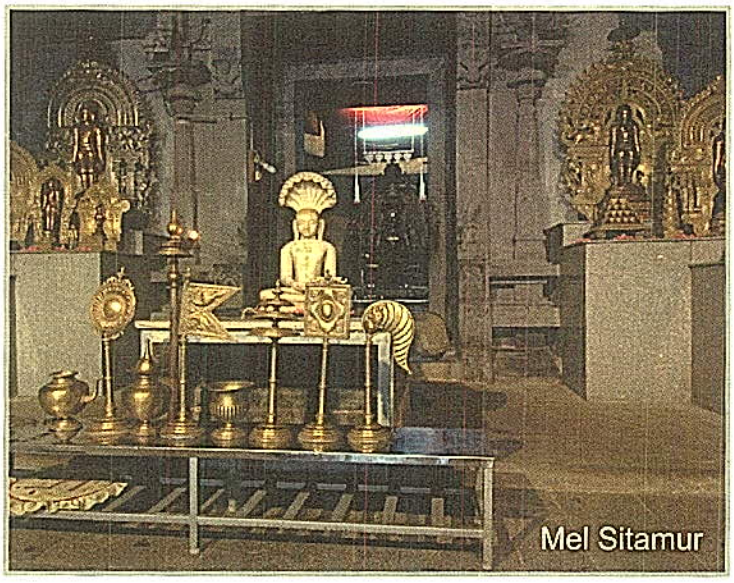
Mel Sitamur

Mel Sitamur

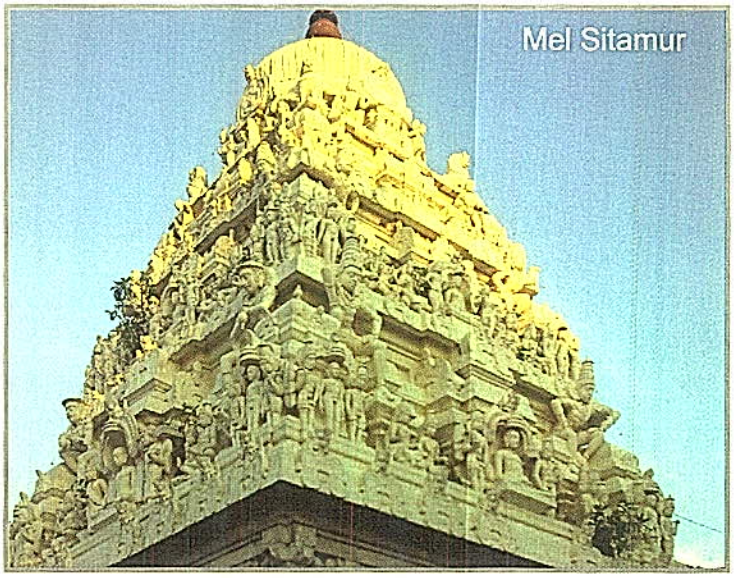
Mel Sitamur

# भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के सहयोग से
# दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र चन्द्रप्रभुजी कूकस, तहसील आमेर, जयपुर का जीर्णोद्धार

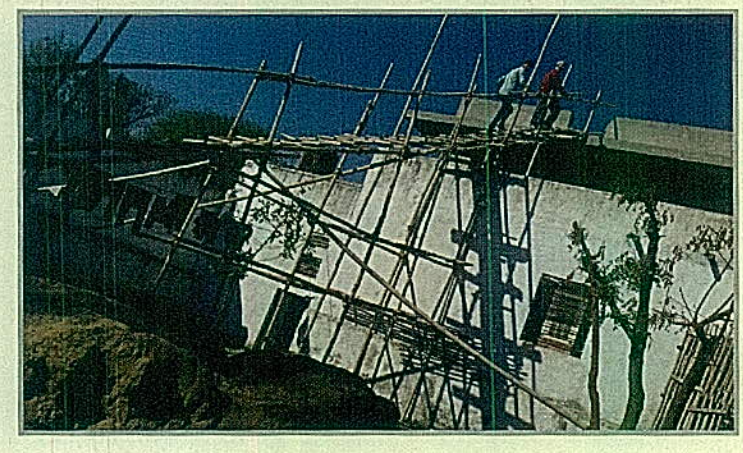

जयपुर दिल्ली राजमार्ग पर जयपुर से 18 कि.मी दूर स्थित 400 वर्ष प्राचीन श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, चन्द्रप्रभु जी कूकस में जिनालय जीर्णोद्धार का कार्य करवाया जा रहा है। प्राचीन मन्दिर की जीर्णशीर्ण अवस्था को देखते हुए क्षेत्र की प्रबन्धकारिणी समिति ने जयपुर जैन समाज के शीर्ष नेतृत्व व भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी राजस्थान अंचल के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र के गोधा के सान्निध्य में दिनांक 23.10.2015 को जिनालय जीर्णोद्धार का कार्य प्रारम्भ किया था। गत 18 माह में क्षेत्र में जिनालय भवन को ढांचा तैयार किया जा चुका है व आगे के कार्य जारी है।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी गत लगभग 100 वर्षों से सम्पूर्ण भारत में स्थित प्राचीन जिन मन्दिरों की सुरक्षा, जीर्णोद्धार व रख रखाव आदि अनेक व्यवस्थाओं की समुचित जिम्मेदारी का निर्वहन कर रही है। कमेटी द्वारा कूकस क्षेत्र के जिलानय जीर्णोद्धार कार्य हेतु 5.00 लाख की राशि स्वीकृत कर भिजवाई गयी है कार्य प्रगति पर है।

# शाश्वत ट्रस्ट ने मानव सेवा में बढ़ाया एक और कदम

## शिखरजी में प्रथम बार कैंसर प्रिडिटेक्शन कैम्प

श्री सम्मेद शिखरजी (मधुबन) स्थित श्री दिगम्बर जैन शाश्वत तीर्थराज सम्मेदशिखर ट्रस्ट गत 13 वर्षों से यहां आने वाले यात्रियों की आवास और शुद्ध भोजन की सुंदर व्यवस्था तो कर ही रहा है, साथ ही स्थानीय लोगों के कल्याण के लिये समय-समय पर निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर, विकलांग शिविर, बच्चों का स्वास्थ्य शिविर आदि का आयोजन करता रहा है और इस वर्ष श्री आदिनाथ भगवान के जन्म एवं तप कल्याणक के पुनीत अवसर पर पूरे गिरिडीह जिले में प्रथम बार यहां मुंबई से आई 6 डॉक्टरों व अन्य सदस्यों की टीम के सहयोग से दो दिवसीय प्री डिटेक्शन कैंसर स्क्रीनिंग कैम्प का आयोजन 22-23 मार्च को किया। बहादुरलाल अमृतलाल जैन चैरिटेबल ट्रस्ट, मुंबई के श्री बी.एल. जैन के सहयोग से डॉ.पी.एन. जैन (टाटा मैमोरियल अस्पताल) के नेतृत्व में कैन्सर पेशेन्ट्स एड एसोसिएशन (सीपीएए) की निदेशक मिस अनीता पीटर की टीम के द्वारा गिरिडीह, धनबाद, हजारीबाग समेत कई अन्य जिलों से आये करीब 433 मरीजों की जांच कर कैंसर के मरीजों की पहचान कर उनके इलाज के लिये पटना, रांची, जमशेदपुर, कोलकाता और मुंबई अस्पतालों में निःशुल्क एवं रियायती दरों पर इलाज के लिये रिफर किया।

ज्ञात हो कि इस शिविर का शुभारंभ ध्वजारोहण से डॉ. पी.एन. जैन, श्री सुंदरलाल जैन (मेरठ) तथा श्री किशोर जैन के मंत्रोच्चारण से हुआ। ट्रस्ट के वरिष्ठ ट्रस्टी श्री किशोर जैन (दिल्ली) ने मंगलाचरण, समारोह के मुख्य अतिथि डुमरी के लोकप्रिय विधायक श्री जगननथ महतो तथा शाश्वत ट्रस्ट के महामंत्री सर्व श्री छीतरमल जैन पाटनी (हजारीबाग), कोषाध्यक्ष जम्बू प्रसाद जैन (गाजियाबाद), श्रीकिशोर जैन, विपिन जैन (दुर्गापुर), मदनलाल जैन, एम.पी. अजमेरा, प्रभात सेठी, सुंदर लाल (मेरठ), सान्ध्य महालक्ष्मी के संपादक प्रवीन जैन, सुमन सिन्हा, महावीर प्रसाद जैन, चन्द्र प्रकाश जैन, अनन्दाते, देवेंद्र जैन आदि ने किया था।

विधायक श्री जगननथ महतो ने शाश्वत ट्रस्ट के इस जनकल्याणकारी कार्य के लिये ट्रस्ट के अधिकारियों, डॉक्टरों की टीम और जैन समाज के अद्वितीय सहयोग की भूरि-भूरि प्रशंसा की। उन्होंने कहा यहां की गरीब जनता में कैंसर के इलाज की बात तो दूर, जांच के लिये भी पैसा नहीं है। इस कैंसर डिटेक्शन शिविर से गरीब जनता को फ्री इलाज की सुविधा अच्छे अस्पतालों में मिल रही है, यह शाश्वत ट्रस्ट का अद्भुत कार्य है। उन्होंने कहा मधुबन से मांस-मदिरा हटाने के लिये एक जनजागरण अभियान की जरूरत है, जिसके लिये वे सर्वदा आगे रहेंगे। उन्होंने बच्चों को पढ़ाने और शराब छोड़ने पर जोर दिया।

शाश्वत ट्रस्ट के महामंत्री छीतरमल जैन पाटनी ने कैम्प में श्री बी.एल. जैन के सहयोग के लिये धन्यवाद दिया।

शाश्वत ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष जम्बू प्रसाद जैन ने डॉक्टरों का स्वागत किया। उन्होंने कहा यह शाश्वत ट्रस्ट का कैंसर से बचाव, उसकी जांच और इलाज के क्षेत्र में पहला प्रयास है। उन्होंने प्रशासन से भी आह्वान किया कि ऐसे कार्यों को गति प्रदान करें। जैन समाज का यह सबसे बड़ा तीर्थ है और ऐसी पवित्र भूमि पर शाश्वत ट्रस्ट जनमानस के कल्याणकारी कार्य कर भगवान महावीर के सिद्धांतों पर चल रहा है।

कैंसर के कारण और बचाव मुंबई से आए डॉ. पी.एन. जैन ने प्रोजेक्टर पर लाइव डिमोंसट्रेशन देकर कैंसर के कारण, उनसे बचाव के तरीकों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कैंसर का मुख्य कारण तम्बाकु, सिगरेट है। इसके अलावा, पोल्यूशन, कीटनाशक वाले फल-सब्जियां, फास्ट फूड, कोल्ड ड्रिंक आदि भी कैंसर का कारण है। मोटापा, ज्यादा शूगर और नमक लेने से परहेज करें। शुरूआती लक्षणों में मुंह में अल्सर, कब्ज रहना, बार-बार पीलिया होना, पेशाब-स्टूल में या मुंह से खून आना, महिलाओं के स्तनों में गांठ, अचानक वजन में गिरावट आदि कैंसर के लक्षण है और तुरंत डॉक्टर से जांच करानी चाहिए। कैंसर लाइलाज नहीं है, उसका शुरू में ही डिटेक्शन कर लिया जाए तो इलाज हो जाता है। कैंसर से बचने के लिये हमें अपना लाइफ स्टायल बदलना होगा। बच्चों को फॉस्टफूड, कोल्ड-ड्रिंक से दूर रखेंगे तो वे मोटापे के शिकार नहीं होंगे और कैंसर से भी बचें रहेंगे। स्कूल-कॉलेजों के बाहर से गुटके-सिगरेट की दुकान सख्ती से बंद करें।

### मोबाइल पर लंबी बात करना घातक

मोबाइल पर 5-6 घंटे बात करने वालों को भी अगाह करते हुए डॉ पी.एन. जैन ने बताया कि मोबाइल की रेडिएशंस से ब्रेन को नुकसान पहुंचता है। इसके लिये वे कोर्ड का इस्तेमाल करें तथा बायें कान से ज्यादा सुने और लेंडलाइन को बढ़ावा दें, लंबी बातें न करें।

शाश्वत ट्रस्ट भवन के निहारिका परिसर में कैंसर मरीजों की जांच के लिये सर्जन डॉक्टर सी.एल. जोशी, डॉ. अमिताभ लाल, प्रसूति शास्त्री डॉक्टर, खून की जांच टीम, फिजीशियन, ईएनटी डॉक्टरों ने रोगियों की जांच कर रिपोर्ट दी जिसका आंकलन कर सीपीएए निदेशक अनीता पीटर ने 433 लोगों में से 80 रोगियों को कैंसर के लक्षण पा कर उन्हें आगे निःशुल्क और रियायती जांच और इलाज के लिये संबंधित अस्पतालों में रिफर किया। दोनों दिन डॉक्टरों की टीम मुस्तैदी से कार्य करती रही और उनके सहयोग के लिये शाश्वत के दोनों मैनेजर - पद्युमन जैन और संजीव जैन के नेतृत्व में ट्रस्ट के एनयतुल्लाह सैयदी, भोला तिवारी, गंगाधर महतो, अशोक दास आदि पूरा स्टाफ पूरी लगन से कार्य करते व आने वाले मरीजों की मदद करते नजर आये। दोनों दिन बाहर से आने वाले मरीजों को शाश्वत ट्रस्ट की ओर से निःशुल्क भोजन की व्यवस्था की गई।

हैरानी की बात थी कि श्री सम्मेदशिखर यात्रा के लिये आए अनेक यात्रियों ने भी इस कैम्प का लाभ उठाया। इस तरह से इस अंचल में दो माह से चलाए गये कैंसर जागरूकता अभियान के परिणामस्वरूप यह सफल अभियान सम्पनन्हुआ।

## चित्रमय झलकियाँ

प्री. डिटेक्शन कैंसर स्क्रिनिंग कैम्प

स्थान :- शाश्वत विहार (निहारिका परिसर) मधुबन, शिखरजी
सौजन्य से
बहादुर लाल अमृत लाल जैन
चैरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई

# नैनागिरि से दमोह मार्ग हेतु 9 करोड़ की स्वीकृति से हर्ष

## म.प्र.शासन का आभार, सुरेशजी आईएएस के प्रयासों को मिली सफलता

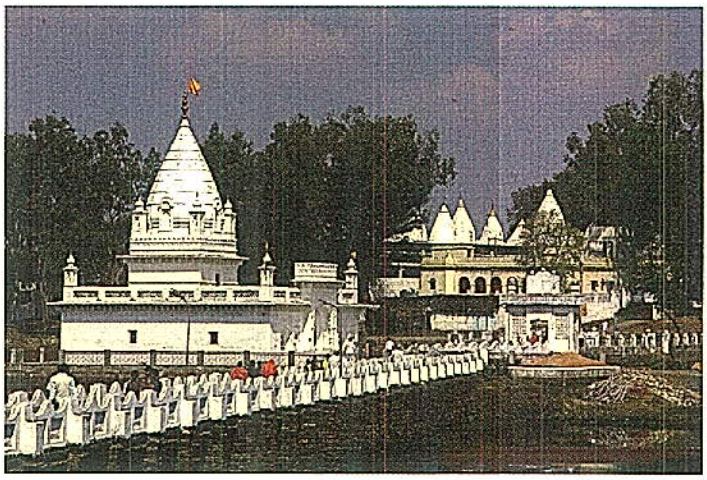

नैनागिरी । छतरपुर जिले के दक्षिण में सागर और दमोह जिलों की सीमा पर जैन तीर्थ नैनागिरि स्थित है। नैनागिरि से दमोह जाने के लिए सीधा और निकटतम मार्ग अभी तक उपलब्ध नहीं था। अब मध्यप्रदेश सरकार ने नैनागिरि से मझगुवाघाटी तक सात किलोमीटर का नया और सीधा मार्ग स्वीकृत कर दिया है। इस मार्ग के निर्माण हेतु शासन ने कुल 9 करोड़ रूपये की स्वीकृति प्रदान की है और वर्ष 2017–18 के लिए कार्यपालन यंत्री, लोक निर्माण विभाग, छतरपुर को रूपये एक करोड़ का आवंटन प्रदान कर दिया है। इस मार्ग के बन जाने से नैनागिरि और दमोह जिले के अनेक ग्रामों के ग्रामीण व्यक्तियों को पेट्रोल और डीजल के खर्च और वाहनों के संधारण पर प्रतिवर्ष लाखों रूपये का लाभ प्राप्त होगा। छात्रों को परीक्षा केन्द्र पर पहुँचने, ग्रामीण व्यक्तियों को चिकित्सालय और न्यायालय पहुँचने में अत्यधिक समय की बचत होगी। प्रशासन और पुलिस की इस क्षेत्र में पहुँच आसान होने से पूरे क्षेत्र की विधि व्यवस्था बहुत अच्छी हो जावेगी। उप पुलिस महानिरीक्षक, छतरपुर, कलेक्टर, छतरपुर और पुलिस अधीक्षक, छतरपुर ने शासन के इस निर्णय का स्वागत किया है।

नैनागिरि, मानकी, खिरिया और मझगुवाघाटी के वर्तमान और भूतपूर्व सरपंचो, पंचों और स्थानीय जनप्रतिनिधियों ने इस मार्ग को प्राथमिकता पूर्वक स्वीकृत करने के लिए दमोह जिले के वरिष्ठ विधायक और प्रदेश के वित्त मंत्री माननीय जयंत मलैया जी को बधाई दी है। इस मार्ग को स्वीकृत कराने के लिए नैनागिरि जैन तीर्थ के अध्यक्ष श्री सुरेश जैन (आई.ए.एस.) और उनके सहयोगी पदाधिकारियों और सदस्यों के प्रयासों की सराहना की है। यह उल्लेखनीय है कि माननीय मलैया जी ने छह वर्ष पूर्व नैनागिरि के समीप स्थित खिरिया सिंचाई तालाब (आदिसागर) स्वीकृत किया था। यह तालाब बन कर पूर्ण हो गया है और इस तालाब से गत तीन वर्षो से 15 ग्रामों में भरपूर सिंचाई हो रही है।

– राजेन्द्र जैन 'महावीर'
217, सोलंकी कालोनी, सनावद
जिला खरगोन, म.प्र.
मो.नं. 7869049749
ई–मेल – rjainmahaveer@gmail.com

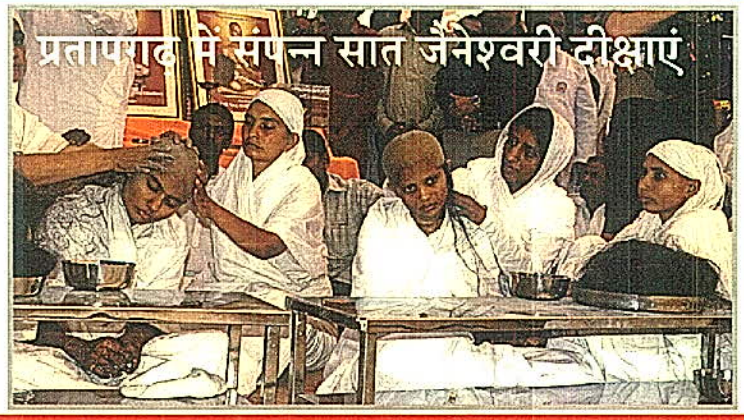

# वर्तमान की सर्वोच्च आवश्यकता जैन धर्म गुरुओं एवं समाज के कर्णधारों से एक मार्मिक अपील

## (सन्दर्भ : श्री सम्मेदशिखरजी)

- एम.पी. अजमेरा

लुप्त संस्कार, समाज द्वारा विभिन्न आयोजनों पर भारी अनावश्यक खर्च एवं प्रशासकीय सेवाओं में शून्यता-एक चिन्तनीय स्थिति

(क) हमारे पूजनीय आचार्य एवं मुनिगण तथा राष्ट्रीय स्तर के श्वेताम्बर एवं दिगम्बर समाज में अग्रणी महानुभवों से आमजनों की भावनाओं का यह प्रेषण करते हुए विनम्र निवेदन है कि इन बिन्दुओं पर गंभीरता पूर्वक विचारोपरान्त निर्णय लेकर ऐतिहासिक उपलब्धियों से समाज का गौरव बढ़ावें।

**1. विद्यालयों की स्थापना:-**

युवा पीढ़ी में जैन संस्कारों की शून्यता प्रबल रूप में जो दिख रही है उसमें सुधार के लिए अपने सम्पूर्ण भारत के सभी प्रमुख प्रदेशों में कम से कम एक जैन संस्कारों से परिपूर्ण विश्व स्तरीय शिक्षा का स्तर लिए आवासीय व्यवस्था के साथ शिक्षालयों की स्थापना वर्तमान की सर्वोपरि आवश्यकता है ताकि हम अपने युवाओं में तथा आने वाले पीढ़ी में जैन संस्कारों की उपलब्धता प्राप्त कराकर एक सुन्दरतम वातावरण की स्थापना में योगदान करें।

अगर विश्व विख्यात तीर्थ की सदा-सदा के लिए सुरक्षा करनी है, तो वहां पर संस्कार युक्त राष्ट्र स्तरीय, आवासीय विद्यालय की स्थापना करना सर्वाधिक अवाश्यक है, ताकि इस विद्यालय के माध्यम से मधुबन पंचायत में बसे बच्चों को तथा अन्य बच्चों को संस्कार युक्त भगवान महावीर के आर्दशों के अनुरूप उच्च स्तरीय शिक्षा प्रदान कर, पारसनाथ सम्पूर्ण क्षेत्र में अपनी ऐसी उपस्थिति दर्ज करें, ताकि वहां के सारे परिवार हमारे अनुसार चलें।

**2. 24 तीर्थंकारों के नाम आदर्श ग्रामों का सम्यक चयन:-**

जैन-धर्म के 24 तीर्थंकर हुए हैं जिनके प्रत्येक के नाम से एक-एक ग्राम का चयन कर उसे गोद लेकर आर्दश ग्राम बनाने की आवश्यकता है, ताकि हम राष्ट्र की मुख्यधारा में अपने दायित्वों के निर्वहन करने के साथ-साथ उक्त ग्राम में अहिंसा युक्त वातावरण बनाते हुए निरामिश एवं नशामुक्त ग्राम बनावे तथा उक्त ग्राम के रहने वाले सारे लोगों को सरकार से मिलने वाली सभी सहायता का पूर्ण लाभ ग्रामजनों को दिलावें एवं ऐसा वातावरण तैयार करावें जहां भगवान महावीर के आदर्शों के अनुरूप ग्राम निर्माण में सहयोग कर एक आदर्श उपस्थापित करें।

**3. सभी जैन धर्मावलम्बियों का एक संगठन:-**

वर्तमान में न केवल श्वेताम्बर-दिगम्बर बल्कि इनमें भी अनेक आन्तरिक संगठनों की प्रबलता के प्रतिफल आज सामाजिक तथा राजनैतिक क्षेत्र में हमारी कोई पहचान नहीं है। अभी अजैन लोग अपने सभी समाजों को विखन्डित समाज की संज्ञा देते हैं। वर्तमान की सर्वोच्च आवश्यकता है कि हम सब अपने भेदभाव भुलाकर एक सूत्र में बन्धकर प्रगति पथ के पथिक बनें और पूरे देश के जैन धर्मवलम्बियों को एक नई दिशा दें ताकि हमारी पहचान सर्वत्र अन्य लोग महसूस कर सकें।

**4. प्रशासनिक सेवाओं में हमारे अति विशिष्ट प्रतिभावान जैन छात्र-छात्राओं का प्रवेश:-**

विशिष्ट प्रतिभावानों को सिविल सेवा में जाने के प्रयास करना हमारी जैन समाज की सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए ताकि हमारे प्रतिभावान छात्र/छात्राएँ सिविल सेवा यथा IAS, IPS, IRS आदि में जाकर वर्तमान परिपेक्ष में आहत आमजनों को राहत मिल सके। समाज के वे प्रतिभावान बच्चे जो आर्थिक दृष्टि से सम्पन्नता का अभाव रखते हैं उन्हें लक्ष्मी पुत्र गोद लेकर उन्हें प्रशासनिक सेवाओं के शीर्ष पर पहुँचाने में सहयोग करें तो नवीन जागरण प्रज्ज्वलित होगा एवं ऐसे लक्ष्मी पुत्रों की आर्थिक सम्पन्नता का लाभ समाज को मिलेगा। हमारे ये प्रतिभावान अधिकारी जैन समाज एवं जैन धर्म की पताका सम्पूर्ण देश में आदरपूर्वक लहरायेंगे एवं मानवता की रक्षा कर पूरे देश को एक नई दिशा प्रदान करेंगे।

**5. राष्ट्रस्तरीय शिष्ट मंडल का गठन कर हमारे पूजनीय आचार्यों मुनियों एवं माताजी आदि से मिलकर समाज एवं धर्म हित के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उनके प्रवचनों का लाभ मिले इसका अनुरोध:-**

राष्ट्रस्तरीय जैन समाज के शीर्ष महानुभावों से राय लेकर उनका एक शिष्ट मंडल बनाकर समय निर्धारित कर आचार्यों एवं मुनि महाराजों से मिलकर उनसे निवेदन करे कि वे अपने प्रवचनों में वर्तमान की आवश्यकता के अनुरूप और भगवान महावीर के आदर्शों के हितार्थ जैन समाज में फैले दिखावे पर प्रतिबंध हो, जैन एकता सुनिश्चित हो और विभिन्न आदर्श कार्यक्रमों को देने दिलाने में उनकी भूमिका का लाभ जैन समाज को मिले और प्रतिवर्ष हो रहे करोड़ों रुपयों की बर्बादी पर अंकुश लगाकर जनहित की व्यापक योजनाओं का संचालन जैन धर्म तथा जैन समाजों के हित में हो। इन धर्म गुरुओं आशीर्वाद से उनके बताये मार्ग पर चलने में समस्त जैन समाज के लोग अपनी अग्रणी भूमिका निभानें में आगे आयेंगे एवं यह काल स्वर्णिम काल जैन समाज के लिए होगा, ऐसी भावना है। पूर्ववत मन्दिर निर्माण या जीर्णोद्धार अवश्य होता रहे जहां अति आवश्यक हो पर साथ-साथ इन आदर्श कार्यक्रमों पर भी उनका आशीर्वाद हो।

**6. निवेदन:-**

निवेदन मात्र इतना ही है कि हमारे पूजनीय गुरुजन अपने प्रवचनों के माध्यम से इस वर्ष को और कम से कम आने वाले तीन बरसों में उपर्युक्त 4 मुद्दों को कार्य रूप में परिवर्तित करने हेतु दिशा निर्देश दें इससे समाज एवं जैन धर्म की प्रतिभा चमतकृत होगी जो वर्तमान की सर्वोच्च आवश्यकता आमजन महसूस कर रहे हैं।

आवश्यक खर्च पर कड़ी पाबन्दी जैन समाज और जैन धर्म के व्यापक हित में होगी। ★★★★

# प.पू.राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री 108 विराग सागर जी महाराज के राष्ट्रीय रजत आचार्य पदारोहण वर्ष 2016-17 के अवसर पर चूर्णि सूत्र लेखन का महान कार्य संपन्न

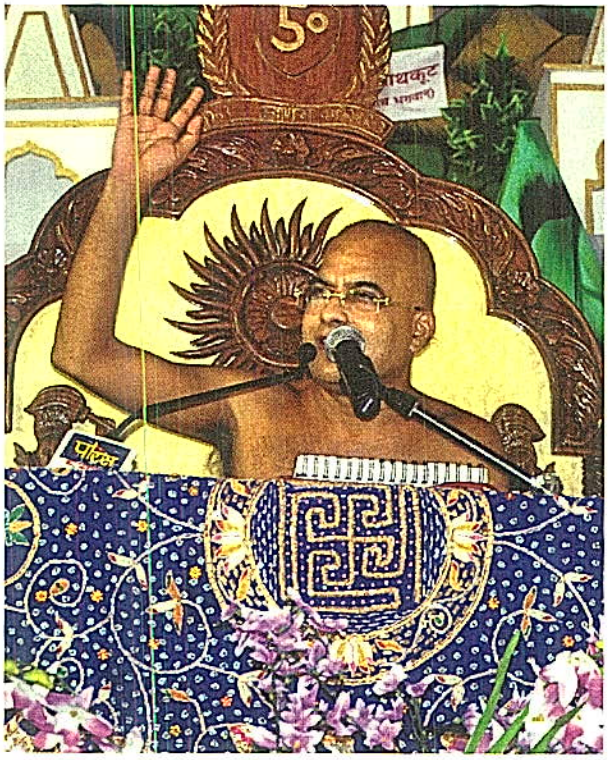

13 फरवरी 2016 को श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र सिहोनियां जी में श्री माघनन्द्याचार्य विरचित शास्त्रसार समुच्चय ग्रन्थ पर प.पू. गणाचार्य श्री विराग सागर जी महाराज द्वारा रचित चूर्णी सूत्रों के लेखन का समापन 1008 श्री शान्तिनाथ भगवान के पादमूल में महोत्सव पूर्वक किया गया। ज्ञातव्य हो कि प.पू. गणाचार्य श्री द्वारा पूर्व में लिखित सर्वोदया. रत्नत्रय वर्धिनी. श्रमण प्रबोधिनी, श्रमण सम्बोधिनी संस्कृत टीका एवं प्राकृत भक्तियों की रचना से जिन आगम समूह समृद्ध हुआ उसके अनन्तर पुन: शास्त्र सार समुच्चय पर चूर्णी सूत्र की रचना पर प.पू. गणाचार्य श्री के महान साहित्यिक अवदान की सम्पूर्ण विद्वत जगत ने भूरि-भूरि प्रशंसा की है। साथ ही अतिशय क्षेत्र श्री सिहोनियां जी में ही प.पू. गणाचार्य श्री विराग सागर जी महाराज ससंघ के पावन सानिध्य में नवीन जिनालय हेतु शिलान्यास कार्यक्रम सम्पन्न हुआ जिसमें 11-11 फीट उत्तंग पद्मासन चतुर्दिश जिनबिम्ब स्थापित किये जावेगे। कार्यक्रम का सम्पूर्ण आयोजन जैन युवा क्लब अम्बाह एवं सोनू मित्र मण्डल अम्बाह द्वारा किया गया।

16 फरवरी 2017 को प्राचीन दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र सुकाण्ड जिला भिण्ड में नवीन जिनालय का शिलान्यास, प.पू. गणाचार्य श्री विराग सागर जी महाराज के ससंघ पावन सानिध्य में सम्पन्न हुआ। प्राचीन मंदिर का जीर्णोद्धार, तीर्थंकर वन एवं क्षेत्र का प्रवेश द्वार बनाने की प.पू. गणाचार्य श्री की प्रेरणा से घोषणा की गई।

18 फरवरी से 27 फरवरी 2017 तक पोरसा जिला मुरैना (म.प्र.) मे प.पू. गणाचार्य श्री विराग सागर जी महाराज ससंघ के पावन सानिध्य में श्री सम्यग्ज्ञान शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

24 फरवरी 2017 को श्री चंद्राप्रभु मंदिर पोरसा में प.पू. गणाचार्य श्री विराग सागर जी महाराज ससंघ के पावन सानिध्य में 1008 श्री शांतिनाथ विधान एवं वार्षिक रथयात्रा महोत्सव हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ साथ ही श्रमणाचार्य श्री विनम्र सागरजी महाराज ससंघ ने प.पू. गुरुदेव के दर्शनार्थ पधार कर महोत्सव में भाग लिया।

25 फरवरी 2017 को श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर पोरसा में श्री विराग सम्यग्ज्ञान पाठशाला- विराग महिला मंच, विराग युवा मंच एवं मंदिर समिति के सहयोग से प्रारम्भ की गई।

4 मार्च 2017 को श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन पंचायती बड़ा मंदिर मुरैना में सिद्धान्त ग्रन्थ की वाचना जयधवला भाग सप्तम एवं परमात्म प्रकाश ग्रन्थ पर प.पू. गणाचार्य श्री विराग सागर जी महाराज ससंघ के पावन सानिध्य में प्रारम्भ गई। इस वाचना के कुलपति पं. श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री, व्याकरणाचार्य मुरैना एवं पं. डॉ. श्री हरिशचन्द शास्त्री प्राचार्य श्री दिगम्बर जैन गोपाल संस्कृत महाविद्यालय मुरैना के संयोजकत्व में श्री पवन कुमार जैन रतीराम पुरा वालों द्वारा वाचना कलश स्थापना के साथ वाचन शुभारम्भ हुई। ध्वजारोहण श्री जगदीश जी जैन द्वारा एवं प.पू. गणाचार्य श्री जी को शास्त्र भेंट श्री पंकज जी जैन मेडीकल द्वारा किया गया है।

16 मई से 25 मई 2017 को श्री पाश्वनार्थ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र करगुवाँ जी झाँसी की पावन धरा पर विश्व के सबसे बड़े चतुर्विध संघ के नायक युग प्रतिक्रमण प्रवर्तक बुन्देलखण्ड के प्रथमाचार्य प.पू. राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री 108 विराग सागर जी महाराज के राष्ट्रीय रजत आचार्य पदारोहण महोत्सव वर्ष 2016-17 के अवसर पर लगभग 200 से अधिक पिच्छी धारी साधु-साध्वियों के पावन सानिध्य में अभूतपूर्व आयोजन किया जा रहा है जिसमें 16 से 20 मई तक समवशरण महामण्डल विधान का विशाल एवं भव्य आयोजन 19 मई को प्रतिभा सम्मान एवं 21 मई से प.पू. गणाचार्य श्री द्वारा रयणसार ग्रन्थ पर लिखी गई 1300 पृष्ठीय रत्नत्रय वर्धिनी संस्कृत टीका पर त्रिदिवसीय विशाल विद्वत संगोष्ठी, 23 मई को राष्ट्रीय रजत आचार्य पदोहरण महोत्सव का विशेष कार्यक्रम व भारतीय ज्ञान पीठ से प्रकाशित रत्नत्रय वर्धिनी टीका का विमोचन 24 मई को युवा सम्मेलन एवं युग प्रतिक्रमण, 25 मई को विशाल रथयात्रा महोत्सव एवं सम्मान समारोह के भव्य आयोजन में अपने सपरिवार इष्टमित्रों सहित अपनी सहभागिता देकर रत्नत्रय धारियों के पावन दर्शन, उपदेश, वैय्यावृत्ति का साथ असीम पुण्यार्जन कर अपना जीवन सार्थक बनायें। विशेष जानकारी हेतु 9450071632/9451130616/9415112556 पर संपर्क करें।

चरण सेवक

| विजय जैन (गहना ज्वेलर्स) | मनोज जैन नायक (गढ़ी वाले) |
|---|---|
| मंत्री | महामंत्री |
| श्री पा.दि.जैन पंचायती बड़ा मंदिर | श्रमण संस्कृति न्यास, मुरैना |
| मो.9301121649 | मो.989332493 |

# गुणवत्तायुक्त शिक्षा व शैक्षिक संस्थाओं की आवश्यकता

- प्रफुल्ल पारख (राष्ट्रीय अध्यक्ष)

बच्चों को शिक्षित करना प्रत्येक अभिभावक का प्राथमिक किन्तु महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व है। परिवर्तनशील युग में शिक्षा जहां नित नए स्वरुप में परिभाषित हो रही है, अभिभावक भी उनकी मेहनत व पसीने की कमाई को उनकी संतानों की शिक्षा पर खर्च कर अब श्रेष्ठ शिक्षण व्यवस्था सुनिश्चित कर रहे हैं, क्योंकि यह पूंजी निवेश उस वृक्ष के बीजारोपण समान है जो कुछ वर्षों में फल देने वाला है। शिक्षा के क्षेत्र में पूंजी निवेश का अभिप्राय अभिभावको द्वारा उनकी संतानों की श्रेष्ठ विद्यालयों में शिक्षण पर खर्च करने से भी है और साथ ही गुणवत्तापूर्ण शैक्षिण संस्थानों के कुछ व्यक्तियों या संस्थाओं द्वारा विद्यालयों के निर्माण से भी है जो परिवर्तनशील युग में समाज की प्राथमिक किन्तु महत्वपूर्ण मांग है। दोनों ही दृष्टिकोण के मद्देनजर शिक्षण के क्षेत्र में पूंजी निवेश अब अत्यंत ही महत्वपूर्ण हो गया है क्योंकि आज के बालक/बालिकाएँ आने वाले कल के भाग्य विधाता है।

प्राचीन काल से ही गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अभिप्राय मनुष्य की संस्कृतिगत उत्कृष्ट जीवन शैली प्राप्ति हेतु संवेदनशीलता में वृद्धि व बोधात्मक विकास से रहा है। वर्तमान युग में नवीन विचारधाराओं के तहत भी शिक्षा का अर्थ बालक/बालिकाओं के सम्पूर्ण विकास से है किन्तु यह चिंतन एवं मंथन का विषय है कि परंपरागत एवं प्रणालीगत तरीकों से संचालित शैक्षिण संस्थाओं में प्रदान किया जा रहा शिक्षण, क्या समय की मांग के अनुरुप सम्पूर्ण एवं परिणामलक्ष्मी है?

जैन समाज हेतु यह गर्व का विषय रहा कि परोपकार व सेवा की भावना से वह शिक्षण जगत को उन्नत कर समाज व देश निर्माण में रचनात्मक भूमिका अदा करता रहा है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व से लेकर अब तक अनेक राज्यों में जैन समाज द्वारा शैक्षिक संस्थाओं का संचालन वृहद स्तर सर पर हो रहा है, फलस्वरुप वह सदियों से शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी है। किन्तु इस अग्रगण्य स्थिति पर बने रहने हेतु परोपकार की प्रणालिका से कुछ हटकर अब गुणवत्तापूर्ण प्रीमियर शिक्षण संस्थाओं की स्थापना व उनके कुशल संचालन से बदलती सामाजिक शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए राष्ट्र निर्माण में सहभागिता आवश्यक है। हमारी भावी पीढ़ियों को संवेदनशील व विवेकपूर्ण बनाने के आशय से उन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने का उत्तरदायित्व हमें अब स्वीकारना ही होगा। यदि ऐसा कर सके तो युवाओ के इस देश भारत में शत-प्रतिशत शिक्षा से हम आने वाले दशकों में जनसांख्यिक लाभांश की लहलहाती फसलें काटते रहेंगे,

2011 की राष्ट्रीय जनसंख्या जनगणना के आकडों के अनुसार देश स्थित जैन समाज में साक्षरता की दर 94.1 है जबकि राष्ट्रस्तरीय साक्षरता की दर मात्र 74.04 है। साक्षरता दर को शत-प्रतिशत तक ले जाने हेतु गंभीर प्रयासी की आवश्यकता है। सामाजिक उदयमियों द्वारा इस क्षेत्र में प्रवेश कर उपलब्ध अवसरों का उपयोग समाज व देश निर्माण में हितावत है। साथ ही बदलती हुई परिस्थितियों में, अभिभावको की उनकी संतानों की शिक्षा के संदर्भ में अब सामान्यत: विकसित हो रही उत्कृष्ट शैक्षिक वैचारिक्त, सरकारी नीतियों व नियमों में बदलाव भी उस माहौल के निर्माण में सहायक होकर हमें प्रोत्साहित कर रहा है कि गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक संस्थाओं की स्थापना व संचालन हेतु कृतसंकल्पित हों, अग्रिम पंक्ति में हमारा स्थान बनाए रख सकें।

इसके अतिरिक्त अल्पसंख्यक समुदायों की शैक्षिक संस्थाओं को स्वतंत्र प्रशासन के लाभ व अवसंरचना के विकास हेतु अनेक सरकारी योजनाएँ अमल में हैं। भारत सरकार के मेक इन इण्डिया, स्टार्टअप एण्ड डिजिटल इण्डिया जैसी परियोजनाओं के माध्यम से मानव के त्रि-स्तरीय कौशल (क) अनुसंधान व ज्ञान (ख) व्यावसायिक व सेवाकीय सुदृढता एवं (ग) कौशल्य कार्मिकता विकास के सार्थक प्रयास किए जा रहे हैं।

राष्ट्रीय कौशल विकास निगम की रिपोर्ट अनुसार वर्ष 2022 तक मात्र महाराष्ट्र राज्य में 1.5 करोड कौशल्य प्रशिक्षण युक्त मानव संसाधनों की आवश्यकता होगी। जैन समाज को शिक्षा के बदले स्वरुप व व्यावसायिक ज्ञान आधारित शैक्षिक संस्थाओं की स्थापना की आवश्यकता को समझते हुए योग्य निर्णय लेना चाहिए।

परंपरागत शैक्षिक संस्थाओं के पूर्णोद्धार की वैचारिकी व उस पर कार्यरत होना आज के समय की समाज व देश हित तथा भावी पीढ़ियं. शैक्षिक सशक्तिकरण हेतु महत्वपूर्ण आवश्यकता है। आईये, हम सामूहिक रुप से रचनात्मक भूमिका का निर्वहन करते हुए समाज व देश को आदर्श व नवस्वरुप प्रदान करने हेतु कृतसंकल्पित हों।

---

**रत्नत्रय वह अमूल्य निधि है, जिसकी तुलना संसार की समस्त सम्पदा से भी नहीं की जा सकती**

**रत्नत्रय की कीमत, उसकी क्षमता अद्भुत है! अन्तमुहुर्त हुआ नहीं कि जीव केवलज्ञान पा सकता है**

**आचार्य विद्यासागर जी महाराज**

# प्राकृत अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन
# श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) में 3 से 6 नवम्बर 2017

- विनोद दोड्डाणवर, बेलगाम

भगवान् बाहुबली महामस्तकाभिषेक महोत्सव 2018 कमेटी तत्त्वावधान में बाहुबली प्राकृत विद्यापीठ श्रवणबेलगोला के आयोजन में जगद्गुरु स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक महास्वामी श्रवणबेलगोला के मार्गदर्शन में सब कमेटी प्राकृत इन्टरनेशनल कान्फ्रेंस के संयोजकत्व में श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) में चार दिवसीय प्राकृत अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का 3 से 6 नवम्बर 2017 में आयोजन किया जा रहा है। इसमें देश-विदेश से लगभग 100 प्राकृत के वरिष्ठ विद्वान् शोधपत्रों को प्रस्तुत करेंगे एवं अन्य 100 प्राकृत युवा विद्वान भी प्रतिनिधि के रुप में चर्चा में भाग लेंगे। इस प्राकृत अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का प्रमुख विषय प्राकृत ग्रंथों में प्राप्त विश्व की प्राचीन सांस्कृतिक एवं साहित्यिक विरासत तथा वैज्ञानिक तथ्यों को उजागर करना है, जिससे विश्व में शान्ति और सौहार्द का प्रसार हो। इस अवसर पर प्राकृत-अपभ्रंश की पुस्तकों का प्रकाशन भी किया जायेगा। इस प्राकृत सम्मेलन में प्राकृत संस्कृति की प्रदर्शनी, सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं प्राकृत कविगोष्ठी भी आयोजित करने की योजना है। प्राकृत-अपभ्रंश के सभी विद्वानों एवं संस्थाओं के सहयोग की अपेक्षा है। इस सम्मेलन का अयोजन अन्तर्राष्ट्रीय परामर्शक मण्डल के सुझावों के अनुसार एक आयोजन समिति कर रही है।

# भगवान महावीर जयन्ती विशेषांक की प्रति राष्ट्रपति को भेंट

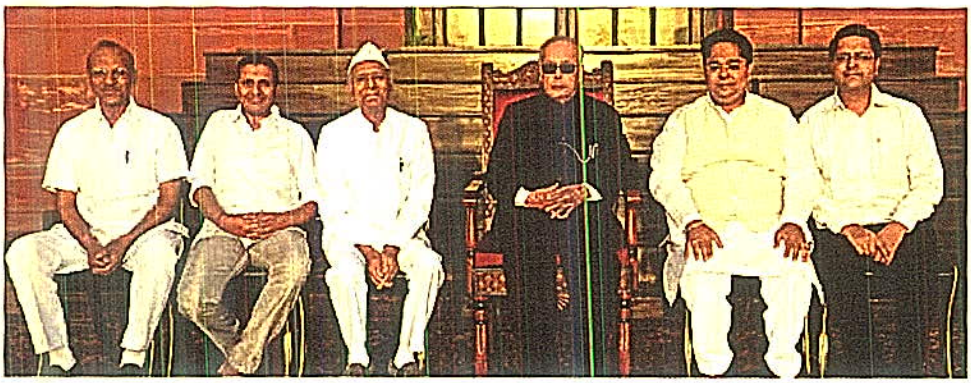

अहिंसा के अवतार, जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी जी के 2616 वें जन्मकल्याणक महोत्सव (9 अप्रैल 2017) की पूर्व संध्या 8 अप्रैल 2017 को सायंकाल 6 बजे सान्ध्य महालक्ष्मी का महावीर जयंती विशेषांक भारत गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम श्री प्रणब मुखजी को भेंट किया गया, जिसे देखकर उन्होंने प्रसन्नता जाहिर की तथा समस्त देशवासियों के लिए महावीर जयंती पर शुभकामनाएं दी।

गत कई वर्षों की परम्परानुसार 52 पृष्ठों में प्रकाशित यह शानदार, आकर्षक, दुर्लभ सामग्री से युक्त संग्रहणीय विशेषांक राष्ट्रपति को भेंट किया। प्रतिनिधि मण्डल में सान्ध्य महालक्ष्मी ग्रुप के संस्थापक श्री किशोर जैन, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के उपाध्यक्ष एवं यमुनापार दिल्ली दिगम्बर जैन समाज के अध्यक्ष श्री पंकज जैन (पारस चैनल), सान्ध्य महालक्ष्मी के संपादक श्री शरद जैन, सिटी एडिटर श्री प्रवीन जैन एवं वरिष्ठ पत्रकार लेखक श्री रमेश जैन एडवोकेट (नवभारत टाइम्स) थे। उल्लेखनीय है कि इस वर्ष 28 जून 2017 से आचार्य श्री विद्यासागर जी स्वर्ण जंयती महोत्सव वर्ष मनाया जाएगा, उसमें संबंधित फोल्डर समिति के महामंत्री श्री पंकज जैन ने राष्ट्रपति जी को भेंट कर अवगत कराया। ★★★★

# जैन प्रचारक के प्रधान सम्पादक श्री प्रदीप जैन वीर के भी सम्पादक नियुक्त

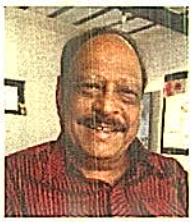

प्रसिद्ध पत्रकार, कवि, टेलीविजन फिल्म निर्माता श्री प्रदीप जैन को वीर का संपादक नियुक्त किया गया है। स्मरण रहे कि श्री अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् द्वारा प्रकाशित विगत् दशक से प्रकाशित वीर पत्रिका अपने क्रांतिकारी और सुधारवादी तेवरों के लिए जानी जाती है। उल्लेखनीय है कि प्रदीप जी के पिता जी जाने माने विद्वान स्व. प. परमेष्ठीदास जैण ने वीर पत्रिका का लगभग 40 वर्षों तक संपादन करके विशेष ऊंचाईयों तक पहुँचाया था।

प्रदीप जी नवभारत टाइम्स, जनसत्ता, दैनिक जागरण जैसे राष्ट्रीय दैनिक पत्रों में अनके वर्षों तक बतौर पत्रकार संलग्न रहे हैं। श्री भारतवर्षीय अनाथरक्षक जैन सोसाईटी द्वारा प्रकाशित पत्रिका जैन प्रचारक के भी वे प्रधान सम्पादक हैं।

धार्मिक, सामाजिक, साहित्यिक, काव्य जगत और फिल्म निर्माण क्षेत्र के कई महत्वपूर्ण सम्मान इनके खाते में दर्ज हैं। टेलीविजन फिल्म निर्माता के रुप में उनके द्वारा निर्मित 200 से अधिक कार्यक्रम दूरदर्शन तथा अन्य चैनलों में प्रसारित हो चुके हैं। ★★★★

# महाराष्ट्र अंचल के पदाधिकारियों द्वारा श्री रामटेक एवं भातकुली क्षेत्र का अवलोकन

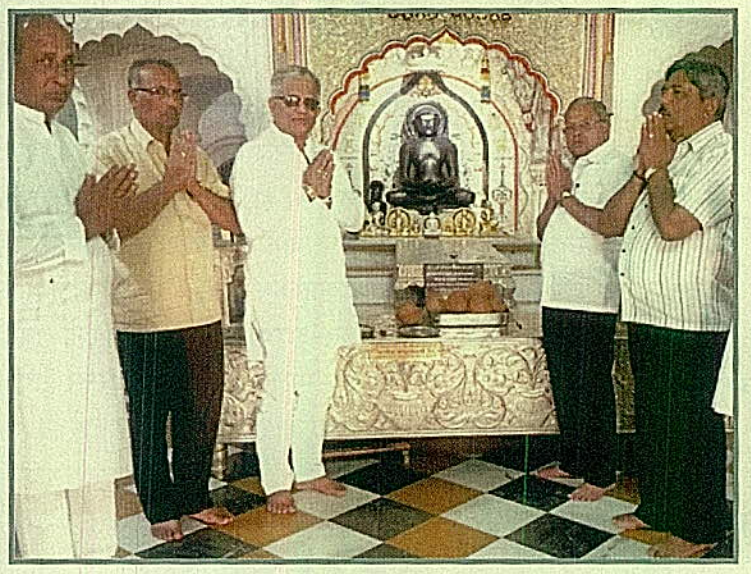

महाराष्ट्र अंचल द्वारा श्री क्षेत्र रामटेक का क्षेत्र अवलोकन दिनांक 1 मार्च 2017 को सूबह किया। क्षेत्र के प्रबंधक श्री संजय जैन ने रामटेक में किये गये एवं चल रहे कार्य का विवरण दिया। उसी दिन दोपहर को श्री भातकुली क्षेत्र पर पदाधिकारियों को आगमन हुआ। भातकूली क्षेत्र पर विश्वस्त श्री डोणगांवकर ने अंचल के पदाधिकारियों को क्षेत्र की जानकारी दी एवं सम्मान किया। दोनो क्षेत्रों का अवलोकन महाराष्ट्र अंचल अध्यक्ष श्री प्रमोदकुमार कासलीवाल, संरक्षक श्री सुरेशकुमार कासलीवाल, सहकोषाध्य श्री भरत ठोले, श्री सुनील काला मानवत आदि ने किये।

# श्रीलंका में बौद्धधर्म और जैनधर्म पर अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

- स्वराज जैन

विगत कुछ दिन पूर्व श्री दिगम्बर जैन तीर्थ संरक्षिणी महासभा, भारत और केलानिया विश्वविद्यालय, श्रीलंका के संयुक्त प्रयास से बुद्धिज्म एण्ड जैनिज्म एन अर्ली हिस्टोरिक एशिया विषय पर सेण्टर फार एशियन स्टडीज केलानिया विश्यविद्यालय, श्रीलंका में एक द्विदिवसीय भव्य संगोष्ठी का आयोजन किया गया। सेमिनार में शोधपत्र वाचन एवं श्रोताओं के रुप में सहभागिता करने हेतु महासभा के यशस्वी अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार जैन सेठी जी के तत्त्वावधान में भारत से सत्तर सदस्यीय दल संगोष्ठी के दो दिन पूर्व ही प्रस्थान कर गया था। संगोष्ठी प्रतिनिधियों में आचार्य श्री विरागसागर जी की विदुषी शिष्या क्षुल्लिका विस्मिता श्री के साथ अनेक पुरातत्त्वविद, इतिहासज्ञ, भाषाविद और साहित्यकार सम्मिलित थे। इनमें प्रो.एस. सेत्तार, बेंगलूरु, प्रो. भागचन्द जैन 'भास्कर', नागपुर डॉ. नरेन्द्रकुमार जैन, निदेशक, दक्षिण पूर्व एशिया महासभा दिल्ली, डॉ. डी.पी. तिवारी लखनऊ, डॉ. संघमित्रा दिल्ली आदि विद्वान विशेष उल्लेखनीय हैं। संगोष्ठी में श्रीलंका के चालीस स्थानीय विद्वानों के अतिरिक्त वियतनाम, सिंगापुर, वर्मा आदि देशों से भी अनेक प्रतिनिधि सम्मिलित हुए।

संगोष्ठी के प्रथम दिन प्रो. भारस्कर जी द्वारा की नोट प्रस्तुत करने के उपरान्त दो दिन के कुल पांच सत्रों में कुल 39 शोधालेख प्रस्तुत किये गये। संगोष्ठी समापन के उपरान्त अनुराधापुर, कैण्डी आदि में स्थित विश्वधरोहरों का अवलोकन कराया गया। एक दिन श्री लंका के पुरातत्त्व विभा. . उत्खनन से प्राप्त सामग्री के संयुक्त रुप में अध्ययन विश्लेशषण करने हेतु दोनों देशों के अधिकृत पुरातत्वविदों और इतिहासज्ञों के वीच पैनल डिस्कशन रखा गया।

अवगत हो श्रमण संस्कृति पर आधारित इस संगोष्ठी के करने का प्रमुख प्रयोजन प्राचीन बौद्ध साहित्य में उन उपलब्ध निगण्ठ धर्म के सन्दर्भों पर विमर्श करना था, जो श्रीलंका में बौद्धधर्म से पूर्व अनुराधापुर, अभयगिरि, मातले आदि स्थानों में उपलब्ध होते हैं। जिससे दोनों देशों के सांस्कृतिक, धार्मिक और ऐतिहासिक सम्बन्धों का गहराई से अध्ययन किया जा सके। महासभा के प्रतिनिधि डॉ. आदीश जैन ने बताया कि भविष्य में श्री लंका में उत्खनन से प्राप्त पुरातात्त्विक सामग्री का दोनों देशों के विद्वान् समवेत रुप से ऐतिहासिक और विश्लेषणात्मक अध्ययन की दिशा में प्रयत्न करेंगे।

Phone :23878293 Fax:022-23859370 ।। तीर्थक्षेत्र संस्कृति के प्राण हैं ।। E-mail : tirthvandana4@yahoo.com

# भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

## BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTH-KSHETRA COMMITTEE

कार्यालय : हीराबाग, सी.पी. टैंक, मुंबई - ४०० ००४

फोटो

## आजीवन सदस्यता फार्म

दिनांक .....२०

श्रीमान् महामंत्री जी,

मैं दिगम्बर जैन हूँ और भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का आजीवन सदस्य बनना चाहता/चाहती हूँ। मैं इस संस्था के उद्देश्यों एवं नियमों, उपनियमों से सहमत हूँ। मैं अपनी पूर्ण सामर्थ्य से संस्था के कार्यों में अपना सहयोग देने के लिए सदैव तत्पर रहूँगा/रहूँगी। संस्था के नियमानुसार निर्धारित सदस्यता शुल्क की राशि रु.११,०००/-(रुपये ग्यारह हजार) भिजवा दी है/भिजवा रहा/रही हूँ। कृपया मेरी यह राशि संस्था के ध्रुवफंड (Corpus Fund) में जमा करें तथा आजीवन सदस्यता स्वीकार कर सूचित करने की कृपा करें।

नाम ..... आयु .....

पिता/पति का नाम .....

| | |
|---|---|
| पता निवास ..... | कार्यालय ..... |
| ..... | ..... |
| ..... | ..... |
| पिन कोड : ..... | पिन कोड : ..... |
| टेलीफोन/मोबाइल नं.: ..... | टेलीफोन/मोबाइल नं.: ..... |
| ई मेल : ..... | ई मेल : ..... |

**व्यक्तिगत विवरण फॉर्म संलग्न है ।**

(आवेदक के हस्ताक्षर)

नोट : (1) 21 वर्ष से अधिक आयु वाला कोई भी दिगम्बर जैन धर्मावलम्बी स्त्री/पुरुष पदाधिकारी परिषद की स्वीकृति से सदस्य बन सकेगा।

(2) जो दातार 80जी. का लाभ लेना चाहता है तो उपरोक्त निर्धारित राशि में से 7,500/- रु. 'भारतवर्षीय दिग म्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट' के नाम से चेक अथवा बैंक ड्राफ्ट बनाकर भेजें या बैंक ऑफ बड़ौदा, वी.पी.रोड मुंबई ब्रांच के सेविंग ख ाता क्रं. 13100100008771 में जमा कराकर हमें सूचित करें। शेष 3,500/- रु. का चेक अथवा बैंक ड्राफ्ट 'भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी' के नाम से बनाकर भेजें अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी.पी.टैंक मुंबई ब्रांच के संविंग खाता क्रं. 001210100017881 में जमा कराकर हमें सूचित करें।

for office use only

उपरोक्त आवेदन पत्र भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की पदाधिकारी परिषद की दिनांक .....की सभा में प्रस्तुत किया गया और सदस्यता स्वीकार/अस्वीकार की गई ।

सदस्यता क्रमांक :

दिनांक : महामंत्री

Phone :23878293 Fax:022-23859370 || तीर्थक्षेत्र संस्कृति के प्राण हैं || E-mail : tirthvandana4@yahoo.com

# भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

## BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTH-KSHETRA COMMITTEE

कार्यालय : हीराबाग, सी.पी. टैंक, मुंबई - ४०० ००४

प्रतिनिधि फोटो

## आजीवन सदस्यता फार्म

(संयुक्त परिवार, फर्म,पेढ़ी, कंपनी, चेरिटेबल ट्रस्ट, सोसायटी या कॉर्पोरेट बाडी के लिए)

दिनांक .....२०

श्रीमान् महामंत्री जी,

हम भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं। हम इस संस्था के उद्देश्यों एवं नियमों, उपनियमों से सहमत हैं। हम अपनी पूर्ण सामर्थ्य से संस्था के कार्यों में अपना सहयोग देने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे। संस्था के नियमानुसार निर्धारित सदस्यता शुल्क की राशि रु.११,०००/-(रुपये ग्यारह हजार) भिजवा दी है/भिजवा रहे हैं। कृपया हमारी यह राशि संस्था के ध्रुवफंड (Corpus Fund) में जमा करें तथा आजीवन सदस्यता स्वीकार कर सूचित करने की कृपा करें।

संस्था का नाम : .....

पूर्ण पता : .....

.....

.....पिन कोड : ..... फोन : .....
एस.टी.डी.

.....मो.नं.:.....ई.मेल: .....

प्रतिनिधि का नाम : .....

प्रतिनिधि का व्यक्तिगत विवरण फॉर्म संलग्न है ।

(आवेदक के हस्ताक्षर तथा सील)

नोट : (1) कोई भी फर्म, पेढ़ी, कंपनी, चेरिटेबल ट्रस्ट, संयुक्त कुटुम्ब, सोसायटी या कारपोरेट बाडी पदाधिकारी परिषद की स्वीकृति से सदस्य बन सकेगी। परन्तु उनको सदस्य बनने पर अपनी ओर से प्रतिनिधि के रूप में किसी एक दिगम्बर जैन व्यक्ति का ही नाम भेजना होगा। यह प्रतिनिधि सदस्य कभी भी बदला जा सकेगा । *इस प्रकार की सदस्यता 25 वर्ष की अवधि तक के लिए ही रहेगी ।*

(2) जो दातार 80जी. का लाभ लेना चाहता है तो उपरोक्त निर्धारित राशि में से 7,500/- रु. 'भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट' के नाम से चेक अथवा बैंक ड्राफ्ट बनाकर भेजें या बैंक ऑफ बड़ौदा, वी.पी.रोड मुंबई ब्रांच के सेविंग खाता क्र. 13100100008771 में जमा कराकर हमें सूचित करें। शेष 3,500/- रु. का चेक अथवा बैंक ड्राफ्ट 'भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी' के नाम से बनाकर भेजें अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी.पी.टैंक मुंबई ब्रांच के संविंग खाता क्रं. 001210100017881 में जमा कराकर हमें सूचित करें।

for office use only

उपरोक्त आवेदन पत्र भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की पदाधिकारी परिषद की दिनांक .....की सभा में प्रस्तुत किया गया और सदस्यता स्वीकार/अस्वीकार की गई ।

सदस्यता क्रमांक :

दिनांक : महामंत्री

# भगवान बाहुबली महामस्तिकाभिषेक-2018

स्वराज जैन, नई दिल्ली

श्री गोमटेश्वर बाहुबली महामस्तकाभिषेक-2018 की आयोजन समिति के एक समारोह में टाइम्स ऑफ इन्डिया ग्रुप की चेयरमेन श्रीमती इंदू जैन को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी द्वारा भेजे गए प्रशस्ति पत्र, मंगल कलश एवं शॉल भी भेंट किए गए।

श्रीमती इंदू जैन चेयरमैन टाइम्स ग्रुप ने वर्ष 1993 में श्रवणबेलगोला में हुए महामस्तकाभिषेक समारोह प्राप्त हुआ था। उन्होंने भट्टारक श्री चारुकीर्ति जी की कार्य करने की विलक्षण क्षमता एवं प्रतिमा का विशेष रुप से गुणमान किया और कहा कि इसके लिए हम सबको नतमस्तक होकर उनका आभार व्यक्त करना चाहिए। उनके चिरायु होने की हम सभी सदैव कामना करते है।

आयोजन समिति की अध्यक्षा श्रीमती सरिता जैन ने कहा कि महामस्तकाभिषेक की तैयारियों जोर-शोर से सफलता के साथ चल रही हैं, और इस बार समारोह की भव्यता देखते ही बनेंगी।

श्री पुनीत जैन, अध्यक्ष प्रचार-प्रसार समिति महामस्तकाभिषेक समारोह-2018 ने समस्त जैन समाज से अनुरोध किया कि वह इस विलक्षण अवसर को अपनी आँखो से देखकर अपना जीवन चरितार्थ करें।

इस अवसर पर रेवती जैन (बेनेट युनिवर्सिटी), सरिता जैन चेन्नई, सतीश जैन (एण्व), प्रमोद जैन, वर्धमान ग्रुप, पुनीत जैन (अध्यक्ष प्रचार-प्रसार) अनिल जैन कनाडा, जवाहरलाल जैन, पवन गोधा, स्वराज जैन (टाइम्स), सुनील जैन, आदीश जैन सी.ए. एन सी जैन, गजेन्द्र बज, शोनल श्रीवास्तव, कुमारी कल्यानी एवं योगेश चौहान (टाइम्स ग्रुप) आदि उपस्थित थे। समारोह का संचालन पण्डित जय कुमार उपाध्येय ने किया।

# मन को गुदगुदाने वाली कृति

कृति : पूज्य आचार्यश्री का अविस्मरणीय फिरोजाबाद – वर्षायोग
कृतिकार : (प्राचार्य) श्री नरेन्द्रप्रकाशजी जैन, फिरोजाबाद
संस्करण एवं प्रतियॉ : प्रथम, 2017, 1000 प्रतियॉ।
आकार एवं पृष्ठ : डिमाई, 32
प्रकाशक : श्रुत सेवा निधि न्यास,
104, नई बस्ती, फिरोजाबाद 283 203 (उ.प्र.)
मुद्रक : कान्हा प्रिन्टर्स, नई बस्ती, फिरोजाबाद–283 203 (उ.प्र.)

उत्कृष्ट मुनिचर्या का पालन करने वाले महान दिगम्बर जैन संत, संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज को कौन नहीं जानता। अनियतविहारी आचार्यश्री जब विहार करते हैं तो हजारों आबाल–वृद्ध युवा बिना किसी साधन सूचना के पीछे–पीछे दौड़ने लगते हैं। जब वे किसी नगर या तीर्थ पर पहुँच जाते है तब वहॉ की सभी आवासादि की व्यवस्थायें छोटी पड़ जाती है एवं टीन के कमरों में अस्थायी व्यवस्थायें बनानी पड़ती हैं। 70 वर्ष पूर्व शरदपूर्णिमा (10–10–46) को सदलगा (कर्नाटक) में जन्मे विद्याधर ही आज पूज्य आचार्यश्री विद्यासागरजी है। 30 जून 1968 को मुनि दीक्षा प्राप्त करने वाले मुनि विद्यासागर जी को उनके गुरू आचार्य श्री ज्ञानसागर जी ने 22.11.72 को आचार्य पद प्रदान किया। फलतः 30.06.2018 को उनका स्वर्ण संयम दिवस (50वॉं दीक्षा दिवस) आ रहा है।

जैन समाज के गौरव, अ.भा.दि. जैन शास्त्रि परिषद के अध्यक्ष एवं जैन गजट के सम्पादक के दायित्व का निर्वाह कर चुके ज्ञान–वय वृद्ध प्राचार्यश्री की वक्तृत्व एवं लेखन कला से सम्पूर्ण समाज सुपरिचित ही है।

**समय के शिलालेख** एवं **चिन्तनप्रवाह** शीर्षक उनकी कृतियॉ समाज द्वारा अत्यन्त आदरपूर्वक हस्तगत की गई एवं उन कृतियो का बहुमान किया गया। अर्हत्वचन के सम्पादक मंडल के अध्यक्ष के रुप में हमें विगत 10 वर्षों से आपका सतत मार्गदर्शन प्राप्त है।

समीक्ष्य कृति **पूज्य आचार्यश्री का अविस्मरणीय फिरोजाबाद – वर्षायोग** अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि पूज्य आचार्यश्री एवं उनके संघ की निस्पृह वृत्ति एवं अनासक्ति के कारण उनका कोई अभिवन्दन ग्रंथ आज तक नहीं छपा है। उनकी कृतियॉ तो बहुत सी निकली है किन्तु जीवन के रोचक प्रेरक प्रसंगों अथवा विशिष्ट प्रवचनाशों की कृतियॉ दुर्लभ हैं। मैंने 1970 में आचार्य श्री सीमन्धरसागर, मुनिश्री सुबाहुसागर जी आदि के बहराइच में दर्शन तो किये थे किन्तु 30 से भी कम आयु के किसी युवा मुनि के दर्शन जुलाई 75 में सर्वप्रथम आचार्य विद्यासागर जी के रूप में ही किये थे। मई–जून 1975 में बहराईच के राजकीय इन्टर कालेज से 12वीं कक्षा उत्तीर्ण कर फिरोजाबाद आया ही था। जैन नगर मन्दिर के दर्शन करने गया तो वहॉ परिक्रमा पथ में एक युवा दिगम्बर संत प्रवचन दे रहे थे यदि आप अपने जीवन में कुछ करना चाहते है तो संकल्प करने के साथ **लेकिन, किन्तु एवं परन्तु** को छोड़ना होगा। आप कुछ करने का विचार तो करते हैं किन्तु लेकिन, किन्तु एवं परन्तु के चक्कर में पड़कर उसे कार्यरूप में परिणत नहीं कर पाते।

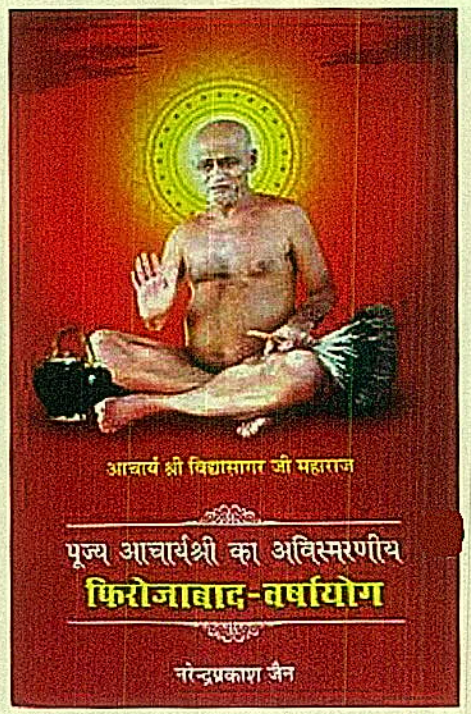


प्राचार्यजी ने प्रस्तुत पुस्तक में फिरोजाबाद में वर्षायोग का सुअवसर अचानक प्राप्त होने की स्थिति का सुन्दर चित्र खींचने के बाद

1. रस परित्याग तप – सही परिभाषा
2. सजातीय से जुड़ो, विजातीय से नहीं
3. रसगुल्ला काण्ट गो टू माउथ
4. पानी टैंक में होता है, टोंटी में नहीं
5. अहंकारी व्यक्ति और छिपकली
6. वह ठहाका आज भी गुदगुदाता है
7. चाह लंगोटी की दुःख भाले
8. प्रतीकात्मक पिच्छी; वास्तविक पिच्छी
9. अतिथि कौन

शीर्षक से उन अनछुए अविस्मरणीय प्रसंगों को अपनी यादों से लिपिबद्ध किया है जो अन्यत्र उपलब्ध नहीं एवं आचार्यश्री की सहजता, सरलता, हाजिर जवाबी तथा दृढ़ता को समझाने के लिए पथ प्रदर्शक हैं।

पुस्तक पठनीय एवं संग्रहणीय है। लेखक इस कृति के सृजन हेतु बधाई के पात्र हैं। स्वर्ण संयम महोत्सव की पूर्व बेला में इस कृति का प्रकाशन अत्यन्त सामयिक है। कान्हा प्रिन्टर्स ने इसका सुरुचिपूर्ण रीति से मुद्रण किया है। अपनी चंचला लक्ष्मी का श्रुत सेवा निधि न्यास जैसे प्रतिष्ठित संस्थान के माध्यम से उपयोग करने हेतु श्री सुरेशचंद जैन भी बधाई के योग्य है।

# पठनीय एवं संग्रहणीय कृति

**कृति** : इतिहास द्वारा मान्य जैन आगम ज्ञानरथ के सार्थवाहक
**लेखक** : डॉ. सूरजमल जैन बोबरा
**निदेशक** : ज्ञानोदय फाउण्डेशन
9/2,स्नेहलतागंज,**इन्दौर** 452007
फोन नं. 0731–2532261,2532050
**संस्करण** : प्रथम, 2017
**आकार** : 21 X 28 c.m.
**पृष्ठ** : 104
**प्रकाशक** : कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, 584,महात्मा गांधी मार्ग,इन्दौर एवं ज्ञानोदय फाउण्डेशन,इन्दौर

तीर्थ एवं जिनवाणी इतिहास के महत्त्वपूर्ण स्त्रोत हैं। हमारे तीर्थों पर उपलब्ध पुरावशेष,खण्डित मूर्तियॉ, पूजनीय मूर्तियों की प्रशस्तियॉ, शिलालेख एवं पाण्डुलिपियॉ इतिहास के अत्यन्त प्रामाणिक स्त्रोत हैं। इसके साथ ही हमें हमारे तीर्थों के महत्त्व को जानने हेतु इतिहास को जानना एवं समझना जरूरी हैं। मैनें 2010 में आयोजित एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में कहा था कि ' **जो इतिहास नहीं पढ़ते वे इतिहास नहीं बनाते**। दुर्भाग्य से हमारे समाज में इतिहास के अध्ययन की प्रवृत्ति बहुत क्षीण हो गई हैं। शोध एवं अनुसंधान कार्य करने वाली संस्थायें या व्यक्ति ऊंगलियों पर गिने जा सकते हैं। यह प्रवृत्ति समाज के लिए अच्छी नहीं हैं।

युवा मस्तिष्क के पारखी,इतिहासज्ञ डॉ. सूरजमल जैन बोबरा ने अपने सुदीर्घ सामाजिक जीवन एवं गहन अध्ययन के नवनीत के रूप में यह नवीन कृति **जैन आगम ज्ञान रथ के सार्थवाहक** हमें प्रदान की हैं। कृति का शीर्षक ही उनके आगमिक ज्ञ को परिलक्षित करता है क्योंकि सार्थवाहक जैन साहित्य का विशिष्ट शब्द है। भाषा एवं राजनीति शास्त्र के छात्र होते हुए भी आपने इतिहास में अपनी रुचि विकसित की एवं उसे जुनून तक पहुँचाया। ज्ञानोदय फाउण्डेशन की स्थापना एवं उसके माध्यम से जैन इतिहास के क्षेत्र मे ज्ञानोदय पुरस्कार का 1998 से प्रवर्तन एवं सतत संचालन इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। प्रस्तुत कृति में साम्प्रदायिक संकीर्णताओं से उपर उठकर आपने 50 से अधिक ऐसे महान मनीषियों का परिचय दिया है जिन्होंने अपने कृतित्व से जैनत्व का गौरव बढ़ाया है। इनके कार्यक्षेत्र एवं साम्प्रदायिक मान्यता के आधार पर बनाये गये काल्पनिक चित्र आपकी कल्पनाशीलता को व्यक्त करते हैं।

यदि दिगम्बर परम्परा के गौतम गणधर,श्रुतकेवली भद्रबाहु ,आचार्य गुणधर,आचार्य धरसेन,आचार्य कुन्दकुन्द को स्थान दिया तो श्वेताम्बर परम्परा के आ. स्थूलिभद्र, आ. शिवशर्मसूरि, जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण को भी विवेचित किया है। आदिकवि पम्प,राज

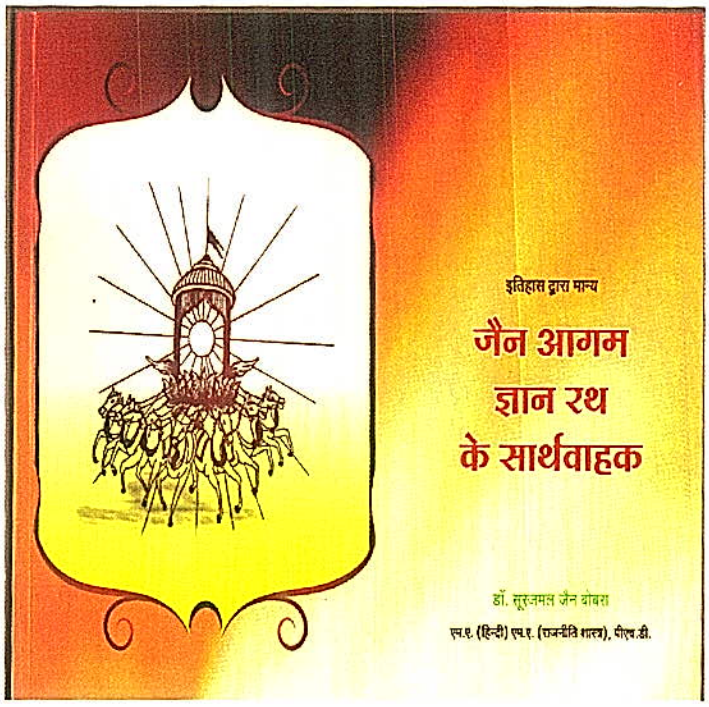


तपस्विनी पाम्बबे,सेनापति चामुण्डराय,महाकवि कल्हण के योगदान से उत्तर भारतीय अपेक्षाकृत कम परिचित हैं किन्तु पुस्तक में उन्हें स्थान मिलना सुखद हैं। आधुनिक युग के श्री कानजी स्वामी, मुनि जिनविजय जी,जिनेन्द्र वर्णी जी एवं आचार्य श्री तुलसी के परिचय से कृति का वैशिष्ठ्य बढ़ा है। 'वैज्ञानिक विधाओं से पोषित आगम ज्ञान', 'तीर्थ एवं जिनवाणीः आगम ज्ञान के प्रमुख सार्थवाहक' एवं 'जैन आगम ज्ञानरथ चलता रहा हैं और चलता रहेगा' जैसे शीर्षक इतिहास की कृतियों में दुर्लभ है।

डॉ. बोबरा का चिन्तन सामाजिक एवं मौलिक है तभी तो वह कृति के अन्त में यह मन को छूने वाला निष्कर्ष दे सके।

**आत्म ज्ञान हृदय के लिए है,लेपटाप के लिए नहीं। हम ज्ञान का डिजिटलाइजेशन तो कर लें किन्तु कहीं वह हमारे हृदय से दूर न चला जाय। ज्ञान मानव के लिए अनावृत हुआ है, सूचना माध्यमों मे बंद होने के लिए नहीं। ज्ञान का संकलन और संग्रहण तब तक सार्थक नहीं, जब तक वह चरित्र में उतर न जाय।**

कृति के सृजन हेतु बोबरा जी को विद्वत समुदाय की ओर से बधाई। 83 वर्ष की उम्र मे शोध प्रबन्ध लिखकर Ph.D. की उपाधि पाने हेतु विशेष बधाई।

कृति संग्रहणीय है। जो पाठक प्राप्त करना चाहे वे मुझसे या लेखक से पत्र द्वारा सम्पर्क कर निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं।

डॉ. अनुपम जैन
'ज्ञानछाया',डी–14 सुदामा नगर,
इंदौर–452009
anupamjain3@rediffmail.com

# देश भर में मनाये गये महावीर जन्म कल्याणक की झलकियाँ

2616 mahaveera jayanthi kushmadini mahila sangha distribute froots in govt Hospital Shravana belagola and Rudrashama

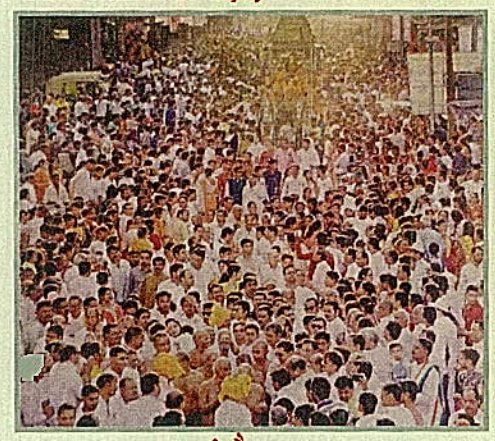

इंदौर

इंदौर

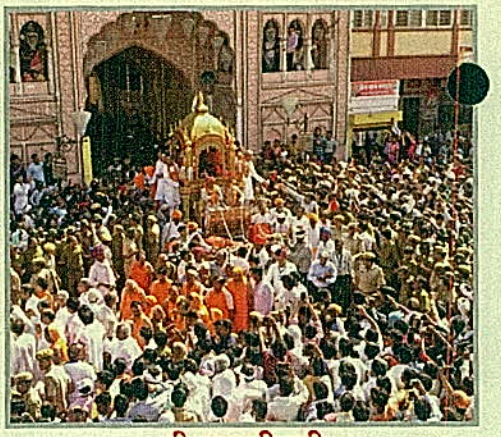

श्री महावीरजी

जयपुर

जयपुर

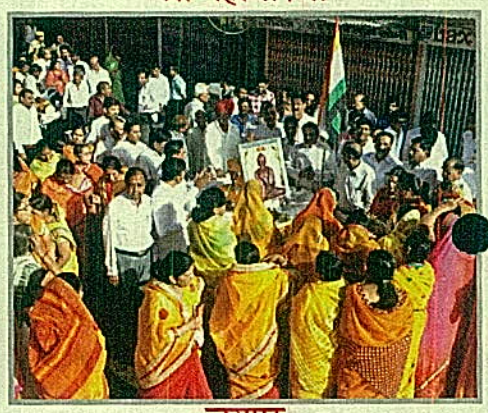

जयपुर

जयपुर

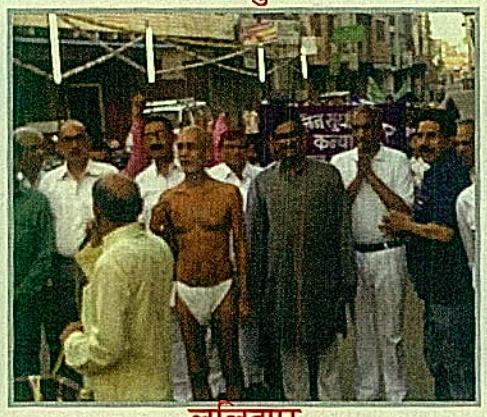

ललितपुर

ललितपुर

# देश भर में मनाये गये महावीर जन्म कल्याणक की झलकियाँ

भगवान महावीर २६१६ के जन्मकल्याणक महोत्सव के प्रसंग पर नागपुर मे ध्वजवंदन करते समय श्रीमती सरिता एम.के. जैन अध्यक्षा, श्री संतोषजी जैन महामंत्री, श्री राजूजी शेट्टी सांसद एवं अन्य.

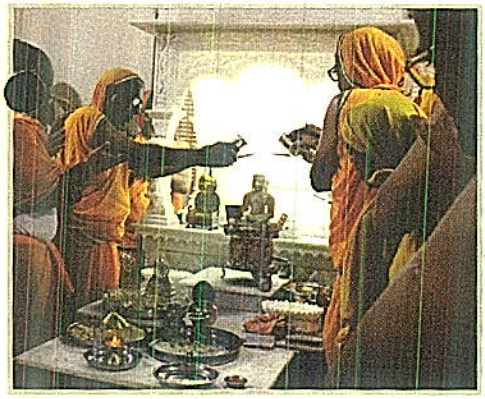

पुणे, मगरपट्टा

पुणे, मगरपट्टा

पुणे, मगरपट्टा

गौतमपुरी, दिल्ली

गौतमपुरी, दिल्ली

गौतमपुरी, दिल्ली

गौतमपुरी, दिल्ली

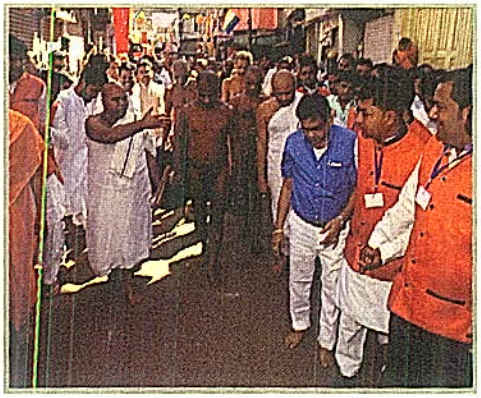

प्रतापगढ़ (राजस्थान)

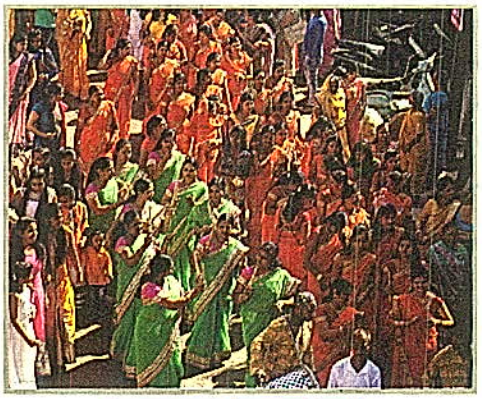

प्रतापगढ़ (राजस्थान)